



# पुना International School

## Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

\*-निबंध-लेखन-

भारत का मंगल अभियान

संकेत-बिंदु

- भूमिका
- मंगल अभियान-एक सफलता
- मंगलयान का सफ़र
- दुनिया का सबसे सस्ता मिशन
- भारत की मज़बूत वैश्विक स्थिति
- मंगलग्रह की पहली तसवीर
- उपसंहार

भूमिका - यदि आज हमारे पूर्वज स्वर्ग से झाँककर पृथ्वी को देखें तो शायद ही उस पृथ्वी को पहचान पाएँगे जिसे वे सौ-दो सौ साल पहले छोड़ गए थे। इसका सीधा-सा कारण है विज्ञान के बढ़ते चरण के कारण लगभग हर जगह आया बदलाव। अब तो यह बदलाव धरती की सीमा लाँघकर अन्य ग्रह तक जा पहुँचा है। भारत का मंगल अभियान इसका ताज़ा और प्रत्यक्ष उदाहरण है।

मंगल अभियान-एक सफलता - भारत ने 24 सितंबर, 2014 को मंगलयान को मंगलग्रह की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर एक नया इतिहास रच दिया। भारत ने यह उपलब्धि अपने प्रथम प्रयास में ही अर्जित कर ली। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि भारत ऐसा करने वाला पहला देश है। अमेरिका रूस और यूरोपीय संघ जैसी शक्तियों को यह सफलता पाने में कई प्रयास करने पड़े। इतना ही नहीं चीन और जापान को अब तक यह सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है। मंगलयान भेजने वाले तीन सफल देशों के महत्वपूर्ण देशों के क्लब में चौथा देश बन गया है।

मंगलयान का सफ़र - इस मिशन को मॉम (ए.ओ.एम.) अर्थात् 'मार्श ऑर्बिटर मिशन' के नाम से जाना जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्रमोदी की मौजूदगी में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिकों द्वारा

मुख्य एल.ए.एम. तथा आठ छोटे थ्रस्टर्स को प्रज्ज्वलित किया गया। इसे मंगल अर्थात् लालग्रह की कक्षा में पहुँचने में तक लगभग एक साल का समय लगा। इस मिशन की सफलता के संबंध में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि 'एम.ओ.एम.' हमें निराश नहीं करेगा।

दुनिया का सबसे सस्ता मिशन - मंगलयान अभियान को दुनिया को सबसे सस्ते मिशनों में गिना जाता है। इस मिशन पर मात्र 450 करोड़ रुपये मात्र का खर्च आया। इस यान का कुल वजन 1350 किग्रा था। इस यान ने अभियान की शुरुआत से 66.6 करोड़ किलोमीटर की दूरी तय करके अपने नियत स्थान पर पहुँचा तो भारतीय वैज्ञानिक खुशी से झूम उठे और एक-दूसरे को बधाई देने लगे। बधाई देने के क्रम में हमारे राजनेता भी पीछे नहीं रहे।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी और अन्य नेताओं ने इस मिशन को सफल बनाने के लिए अथक और निरंतर परिश्रम करने वाले वैज्ञानिकों को ही बधाई नहीं दी उससे जुड़े हर व्यक्ति को बधाई दी। नासा द्वारा भेजा गया मंगलयान मैवेन 22 सितंबर, 2014 को मंगल की कक्षा में प्रवृष्टि हुआ था। इसकी अपेक्षा भारत द्वारा भेजे गए मंगलयान का खर्च मैवेन पर आए खर्च का दसवाँ हिस्सा था।

भारत की मजबूत वैश्विक स्थिति - मंगलनायक लालग्रह की सतह एवं उसके खनिज अवयवों का अध्ययन करने भेजे गए इस यान से पहले भी विभिन्न देशों द्वारा 51 मिशनों द्वारा प्रयास किया गया था। इनमें मात्र 21 मिशन ही सफल रहे। असफलता की इस दर को देखते हुए 'मॉम' की सफलता उल्लेखनीय है। इससे अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की वैश्विक स्थिति मजबूत हो गई। ऐसी अद्भुत सफलता का स्वाद चखने वाला भारत पहला एशियाई देश है।

मंगलग्रह की पहली तसवीर - भारत ने जिस मंगलयान को 24 सितंबर, 2014 को उसकी कक्षा में स्थापित किया था, उसने उससे अगले दिन ही मंगल ग्रह की पहली तसवीर भेजी। दूसरो ने यह लिखकर तसवीर सार्वजनिक की कि 'बहुत खूब है यहाँ का नज़ारा'। वहीं से भेजी एक तसवीर में मंगल ग्रह की सतह को नारंगी रंग का दिखाया गया है जिस पर गहरे धब्बे हैं।

उपसंहार - भारत का मंगल अभियान विज्ञान की दुनिया की अद्भुत उपलब्धि है। इस अभियान से भारत ने विश्व को दिखा दिया कि वह अंतरिक्ष मिशन की दुनिया में पीछे नहीं रहा। मंगलान लालग्रह के बारे में जिस तरह नई-नई जानकारियाँ दे रहा है उसी तरह भारत को अन्य अभियानों में भी सफलता मिलेगी ऐसी आशा है।

### 3. प्रदूषण के कारण और निवारण

अथवा

#### प्रदूषण की समस्या

संकेत-बिंदु -

- भूमिका
- हमारा जीवन और पर्यावरण
- पर्यावरण प्रदूषण के कारण
- प्रदूषण के प्रकार और परिणाम
- प्रदूषण रोकने के उपाय
- उपसंहार

भूमिका - मानव और प्रकृति का साथ अनादिकाल से रहा है। वह अपनी आवश्यकताओं यहाँ तक कि अपना अस्तित्व बचाने के लिए प्रकृति पर निर्भर रहा है। मानव ने ज्यों-ज्यों स यता की ओर कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसकी ज़रूरतें बढ़ती गईं। इन आवश्यकतों को पूरी करने के लिए उसने प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ शुरू कर दी, जिसका दुष्परिणाम प्रदूषण के रूप में सामने आया। आज प्रदूषण किसी स्थान विशेष की समस्या न होकर वैश्विक समस्या बन गई है।

हमारा जीवन और पर्यावरण - मानव जीवन और पर्यावरण का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। जीवधारियों का जीवन उसके पर्यावरण पर निर्भर रहता है। जीव अपने पर्यावरण में जन्म लेता है, पलता-बढ़ता है और शक्ति, सामर्थ्य एवं अन्य विशेषताएँ अर्जित करता है। इसी तरह पर्यावरण की स्वच्छता या अस्वच्छता उसमें रहने वाले जीवधारियों पर निर्भर करती है। अतः जीवन और पर्यावरण का सहअस्तित्व अत्यावश्यक है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण - पर्यावरण प्रदूषण का सबसे प्रमुख कारण है-प्राकृतिक संतुलन का तेज़ी से बिगड़ते जाना। इसके मूल में है-मनुष्य की स्वार्थपूर्ण गतिविधियाँ। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन और दुरुपयोग करने लगा है। इससे सारा प्राकृतिक-तंत्र गड़बड़ हो गया। इससे वैश्विक ऊष्मीकरण का खतरा बढ़ गया है। अब तो प्रदूषण का हाल यह है कि शहरों में सरदी की ऋतु इतनी छोटी होती जा रही है कि यह कब आई, कब गई इसका पता ही नहीं चलता है।

प्रदूषण के प्रकार और परिणाम - हमारे पर्यावरण को बनाने में धरती, आकाश, वायु जल-पेड़-पौधों आदि का योगदान होता है। आज इनमें से लगभग हर एक प्रदूषण का शिकार बन चुका है। पर्यावरण के इन अंगों के आधार पर प्रदूषण के विभिन्न प्रकार माने जाते हैं, जैसे- वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण आदि।

1. वायु प्रदूषण-जिस प्राणवायु के बिना जीवधारी कुछ मिनट भी जीवित नहीं रह सकते, वही सर्वाधिक विषैली एवं प्रदूषित हो चुकी थी। इसका कारण वैज्ञानिक आविष्कार एवं बढ़ता औद्योगीकरण है। इसके अलावा धुआँ उगलते अनगिनत वाहनों में निकलने वाला जहरीला धुआँ भी वायु को विषैला बना रहा है। उसी वायु में साँस लेने से स्वाँसनली एवं फेफड़ों से संबंधित अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं जो व्यक्ति को असमय मौत के मुंह में ढकेल देती हैं।

2. जल प्रदूषण-औद्योगिक इकाइयों एवं कलकारखानों से निकलने वाले जहरीले रसायन वाले पानी जब नदी-झीलों एवं विभिन्न जल स्रोतों में मिलते हैं तो निर्मल जल जहरीला एवं प्रदूषित हो जाता है। इसे बढ़ाने में घरों एवं नालों का गंदा पानी भी एक कारक है। इसके अलावा नदियों एवं जल स्रोतों के पास स्नान करना, कपड़े धोना, जानवरों को नहलाना, फूल-मालाएँ एवं मूर्तियाँ विसर्जित करने से जल प्रदूषित होता है, जिससे पेट संबंधी बीमारियाँ होती हैं।

3. ध्वनि प्रदूषण-सड़क पर दौड़ती गाड़ियों के हार्न की आवाजें आकाश में उड़ते विमान का शोर एवं कारखानों में मोटरों की खटपट के कारण ध्वनि प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। ध्वनि प्रदूषण के कारण ऊँचा सुनने, उच्च रक्तचाप तथा हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ी हैं।

4. मृदा प्रदूषण-खेतों में उर्वरक एवं रसायनों का प्रयोग, फसलों में कीटनाशकों के प्रयोग, औद्योगिक कचरे तथा प्लास्टिक की थैलियाँ जैसे हानिकारक पदार्थों के ज़मीन में मिल जाने के कारण भूमि या मृदा प्रदूषण बढ़ रहा है। इस कारण ज़मीन की उर्वराशक्ति निरंतर घटती जा रही है।

प्रदूषण रोकने के उपाय - प्रदूषण रोकने के लिए सबसे पहले पेड़ों को कटने से बचाना चाहिए तथा अधिकाधिक पेड़ लगाने चाहिए। कल-कारखानों की चिमनियों को इतना ऊँचा उठाया जाना चाहिए कि इनकी दूषित हवा ऊपर निकल जाए। इनके कचरे को जल स्रोतों में मिलने से रोकने का भरपूर प्रबंध किया जाना चाहिए। घर के अपशिष्ट पदार्थों तथा पेड़ों की सूखी पत्तियों का उपयोग खाद बनाने में किया जाना चाहिए।

उपसंहार - प्रदूषण की समस्या विश्वव्यापी एवं जानलेवा समस्या है। इसे रोकने के लिए व्यक्तिगत प्रयास के अलावा सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। आइए इसे रोकने के लिए हम सब भी अपना योगदान दें।

#### 4. भ्रष्टाचार-एक गंभीर समस्या

अथवा

भ्रष्टाचार-कारण और निवारण

संकेत-बिंदु

- भूमिका
- भ्रष्टाचार का अर्थ
- भ्रष्टाचार के कारण
- भ्रष्टाचार के परिणाम
- भ्रष्टाचार रोकने के उपाय
- उपसंहार

भूमिका - उपभोक्तावाद के इस दौर में मनुष्य हर तरह की सुख-सुविधा का उपभोग कर लेना चाहता है। इस मामले में वह समाज में किसी से पीछे नहीं रहना चाहता है। यही चाहत और दिखावे की प्रवृत्ति के कारण वह सुख पाने के हर तौर-तरीके अपनाने लगता है। इससे उसका नैतिक हास होता है। इसी नैतिक हास के कारण व्यक्ति भ्रष्टाचार करने लगता है।

भ्रष्टाचार का अर्थ - भ्रष्टाचार दो शब्दों 'भ्रष्ट' और 'आचार' के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-निकृष्ट श्रेणी का आचरण। भ्रष्टाचार के वश में आकर व्यक्ति नैतिकता का त्याग कर बैठता है और समाज एवं देश के हित का परित्याग कर अपनी जेबें भरने पर उतर आता है। जब व्यक्ति को जेबें भरने में खतरा नज़र आता है तो वह विभिन्न तरीकों से अपना स्वार्थ साधने लगता है। वह भाई-भतीजावाद तथा पक्षपात का रास्ता अपनाकर दूसरों का अहित करने लगता है।

भ्रष्टाचार के कारण - समाज में भ्रष्टाचार फैलने के अनेक कारण हैं। इनमें सबसे मुख्य कारण मानव का स्वभाव लालची होते जाना है। लालच के कारण उसका व्यवहार अर्थप्रधान हो गया है। वह हर काम में लाभ लेने का प्रयास करता है। इसके लिए वह पद और शक्ति का दुरुपयोग करने लगता है। कार्यालयों का वातावरण भ्रष्टाचार के कारण इतना दूषित हो गया है कि बाबुओं की बिना जेबें गरम किए काम करवाने की बात बेईमानी लगने लगती है। ऐसे में भ्रष्टाचार का बढ़ना स्वाभाविक ही है।

भ्रष्टाचार का दूसरा प्रमुख कारण बढ़ती जनसंख्या है, जिसके कारण सुविधाओं की कमी होती जा रही हैं। नौकरियों और सेवा के अवसरों की संख्या कम होती जाती है। दूसरी ओर इन्हें चाहने वालों की निरंतर बढ़ती कतार लंबी होती जा रही है। इसी बात का अनुचित फायदा नियोक्ता और बिचौलिए उठाने लगते हैं। पद के हिसाब से चढ़ावा माँगा जाने लगता है। इससे भ्रष्टाचार बढ़ता है। भ्रष्टाचार का अन्य प्रमुख कारण मनुष्य में बढ़ती धनसंचय की प्रवृत्ति है।

वह निन्यानबे के फेर में पड़कर त्याग, परोपकार, उदारता बंधुत्व जैसे मानवीय मूल्यों की उपेक्षा करने लगता है और अपने ही भाइयों की जेबें काटने का काम करने लगता है। वह चाहता है कि उसे पैसा मिले, चाहे जैसे भी। भ्रष्टाचार का एक कारण हमारे कुछ माननीयों का नैतिक पतन भी है। वे भ्रष्टाचार से अरबोंखरबों की संपत्ति जोड़ लेते हैं। कानून भी ऐसे लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ पाता है। ऐसे लोग बेईमान तथा नवभ्रष्ट लोगों के लिए नमूना बन जाते हैं।

भ्रष्टाचार के परिणाम - भ्रष्टाचार से समाज में अशांति, लोभ तथा नैतिक पतन को बढ़ावा मिलता है। मनुष्य देखता है कि उसके समाज और कभी उसी का समकक्ष हैसियत वाला व्यक्ति आज कहाँ से कहाँ पहुँच गया तो वह अशांत हो उठता है। उसके मन में लोभ जागता है। इससे समाज में एक ऐसा वातावरण पैदा होता है जिससे बगावत की बू आने लगती है। इससे सामाजिक समरसता घटती जाती है। व्यक्ति नैतिक-अनैतिक आचरण का भेद करना भूलने लगता है।

भ्रष्टाचार रोकने के उपाय - भ्रष्टाचार रोकने के लिए जहाँ सरकारी उपाय आवश्यक है, वहीं लोगों में नैतिक मूल्यों के उत्थान की भी आवश्यकता है। सरकार को चाहिए कि वह भ्रष्टाचारियों को कड़ी सज़ा दे, किंतु इसके लिए वह सत्ता पक्ष के भ्रष्टाचारियों की अनदेखी न करे तथा वह बदला लेने की नीयत को भ्रष्टाचार के विरुद्ध उठाया कदम न बताए। इनके अलावा लोगों को अपने पद, सत्ता एवं शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

उपसंहार-आज भ्रष्टाचार समाज का नासूर बनता जा रहा है। इसे समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि हमारे नेतागण आदर्श आचरण करके समाज को भ्रष्टाचारमुक्त बनाने का उदाहरण प्रस्तुत करें। लोग अपनी नैतिकता बनाए रखें, तभी इस नासूर का इलाज संभव है।

## 5. प्रगति के पथ पर बढ़ता भारत

संकेत-बिंदु -

- भूमिका
- शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति
- चिकित्सा क्षेत्र में प्रगति
- रेलवे क्षेत्र में प्रगति
- अंतरिक्ष कार्यक्रम में प्रगति
- फ़िल्म क्षेत्र में प्रगति
- उपसंहार

भूमिका - परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इस परिवर्तन से हमारा देश भी अछूता नहीं है। इसी परिवर्तन के कारण भारत प्रगति के पथ पर सतत् बढ़ता जा रहा है। भारत ने जब आजादी प्राप्त की थी, उस समय के स्वतंत्र भारत और आज के स्वतंत्र भारत की स्थिति में बहुत बदलाव आया है। भारत की यह उन्नति लगभग हर क्षेत्र में देखी जा सकती है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति - भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। यह प्रगति हम स्वतंत्रता के तुरंत बाद की साक्षरता दर और आज की साक्षरता दर में अंतर को देखकर जान सकते हैं। उच्च शिक्षा में प्रगति के लिए सरकार ने प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक व उच्च शिक्षा हेतु नए विद्यालय तथा विश्वविद्यालय खोले। उसने इन विद्यालयों में योग्य शिक्षकों की नियुक्ति की। उसने अनेक तकनीकी शिक्षण संस्थान खोले। इसके लिए छात्रवृत्ति एवं अन्य सुविधाएँ देकर छात्रों को विद्यालय की ओर लाने का प्रयास किया।

चिकित्सा क्षेत्र में प्रगति - भारत ने चिकित्सा की दुनिया में अभूतपूर्व प्रगति की है। इसे मृत्युदर में आई कमी के आँकड़े देखकर जाना जा सकता है। इसके लिए सरकार ने आधुनिक सुविधाओं वाले अनेक अस्पताल खोले जहाँ आधुनिक मशीनें और आपरेशन की व्यवस्था की। इन अस्पतालों में योग्य डाक्टरों की नियुक्ति की। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और बच्चों के इलाज हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक केंद्रों की स्थापना के अलावा स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की है। दिल्ली सरकार ने इससे भी दो कदम आगे बढ़कर मोहल्ला क्लिनिकों की स्थापना करके अनूठा कार्य किया है।

रेलवे क्षेत्र में प्रगति - अंग्रेजों ने 1853 में मुंबई से थाणे के बीच जिस रेल सेवा की शुरुआत की थी आज वह बहुत ही उन्नत अवस्था में पहुंच चुकी है। आज देश में पचास हजार किलोमीटर से भी ज्यादा लंबी पटरियाँ बिछाई जा चुकी हैं। व्यस्त मार्गों पर इनके दोहरीकरण का काम किया जा रहा है। हजारों नए रेलवे स्टेशन बनाए जा चुके हैं। आज इन रेलों से प्रतिदिन लाखों यात्री यात्रा कर रहे हैं। रेल यात्रा को

सुखद और मंगलमय बनाने का अनवरत प्रयास किया जा रहा है। अब तो देश के कई शहरों में मेट्रो रेल सेवा का विस्तार हो चुका है। देश में बुलेट ट्रेन चलाए जाने की योजना है।

अंतरिक्ष कार्यक्रम में प्रगति - आजादी से पहले देश में अंतरिक्ष कार्यक्रमों की कल्पना करना भी अविश्वसनीय था। आज लगभग तीन दशक के समय में ही भारत ने इस क्षेत्र में अविश्वसनीय प्रगति की है। अब तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने एक दर्जन से अधिक आधुनिक उपग्रहों का निर्माण किया है। इसकी शुरुआत 1975 में प्रसिद्ध भारतीय खगोल वैज्ञानिक आर्यभट्ट के नाम वाले उपग्रह से हुई। ये उपग्रह मौसम की जानकारी, संचार, प्राकृतिक संसाधनों के नक्शे तैयार करने के उद्देश्य से छोड़े गए थे। आज दूरसंचार और टेलीविजन के कार्यक्रमों का प्रसारण इनसेट के माध्यम से किया जा रहा है। मंगल ग्रह की कक्षा में 24 सितंबर 2014 को भेजा गया मंगलयान विशेष उल्लेखनीय है।

फ़िल्म क्षेत्र में प्रगति - भारत में स्वतंत्रता के पूर्व से ही फ़िल्में बनाई जा रही हैं पर स्वतंत्रता के बाद भारत ने इस क्षेत्र में खूब तरक्की की है। यह प्रतिवर्ष सैकड़ों फ़िल्में बनती हैं जो भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हैं। उपसंहार-भारत ने प्रगति की जिन ऊँचाइयों को छुआ, उससे भारत विश्व में एक नई शक्ति के रूप में उभरा है। विदेशों में भारत का मान-सम्मान बढ़ा है, जिससे हम भारतीयों को गर्वानुभूति होती है। भारत इसी तरह प्रगति के पथ पर बढ़ता रहे, हम यही कामना करते हैं।

## 6. व्यायाम का महत्त्व

अथवा

व्यायाम एक-लाभ अनेक

संकेत बिंदु -

- भूमिका
- पुरुषार्थ प्राप्ति के लिए आवश्यक
- व्यायाम के लाभ
- व्यायाम का उचित समय
- ध्यान रखने योग्य बातें
- उपसंहार



भूमिका - गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है- 'बड़े भाग मानुष तन पावा' अर्थात् मानव शरीर बड़ी किस्मत से मिलता है। इस शरीर से सुख-सुविधाओं का आनंद उठाने के लिए इसका स्वस्थ एवं नीरोग होना अत्यावश्यक है। यूँ तो स्वस्थ शरीर पाने के कई तरीके हो सकते हैं पर व्यायाम उनमें सर्वोत्तम है।

पुरुषार्थ प्राप्ति के लिए आवश्यक - मानव जीवन के चार पुरुषार्थ माने जाते हैं। ये हैं-धर्म अर्थ, काम और मोक्ष। इन्हें पाने का साधन है- स्वास्थ्य। अर्थात् यदि मनुष्य का जीवन नीरोग है तभी इन पुरुषार्थों के माध्यम से जीवन को सफल बनाया जा सकता है। रोगी और अस्वस्थ व्यक्ति न तो धर्मचिंतन कर सकता है और न उद्यम करके धनोपार्जन कर सकता है, न वह काम की प्राप्ति कर सकता है और न मोक्ष की प्राप्ति। अतः उत्तम स्वास्थ्य की ज़रूरत निस्संदेह है और उत्तम स्वास्थ्य पाने का सर्वोत्तम साधन है व्यायाम। वास्तव में व्यायाम स्वास्थ्य का मूलमंत्र है।

व्यायाम के लाभ - उत्तम स्वास्थ्य के लिए संतुलित पौष्टिक भोजन शुद्ध जलवायु, संयमित जीवन, स्वच्छता आदि आवश्यक है, परंतु इनमें सर्वोपरि है-व्यायाम। व्यायाम के अभाव में पौष्टिक भोजन पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो पाता है।

व्यायाम में चिरयौवन पाने का राज छिपा है। जो व्यक्ति नियमित व्यायाम करता है, बुढ़ापा उसके निकट नहीं आता है। इससे उसका शरीर ऊर्जावान बना रहता है और लंबे समय तक चेहरे या शरीर पर झुर्रियाँ नहीं पड़ती हैं। व्यायाम हमारे शरीर की पाचन क्रिया को दुरुस्त रखता है। सही ढंग से पचा भोजन ही रक्त, मज्जा, माँस आदि में परिवर्तित हो पाता है। व्यायाम हमारे शरीर को रक्त संचार भी ठीक रखता है। इससे शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं मानसिक स्वास्थ्य भी उत्तम बनता है। इसके अलावा शरीर सुगठित, फुरतीला, लचीला और सुंदर बनता है।

व्यायाम का उचित समय - व्यायाम करने का सर्वोत्तम समय प्रातः काल है। इस समय पूरब की लालिमा शरीर में नवोत्साह भर देती है। इससे मन प्रफुल्लित हो जाता है। इस समय बहने वाली शीतल मंद हवा चित्त को प्रसन्न कर देती है और शरीर को ऊर्जा से भर देती है। पक्षियों का कलख कुछ-कहकर हमें व्यायाम करने की प्रेरणा देता हुआ प्रतीत होता है। इस समय शौच आदि से निवृत्त होकर बिना कुछ खाए व्यायाम करना चाहिए। ऋतु और मौसम को ध्यान में रखकर शरीर पर सरसों के तेल की मालिश व्यायाम से पूर्व करना अच्छा रहता है। दोपहर या तेज़ धूप में व्यायाम से बचना चाहिए। यदि किसी कारण सवेरे समय न मिले तो शाम को व्यायाम करना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बातें - व्यायाम करते समय कुछ बातें अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। व्यायाम इस तरह करना चाहिए कि शरीर के सभी अंगों का सही ढंग से व्यायाम हो। शरीर के कुछ अंगों पर ही ज़ोर पड़ने

से वे पुष्ट हो जाते हैं परंतु अन्य अंग कमजोर रह जाते हैं। इससे शरीर बेडौल हो जाता है। व्यायाम करते समय श्वास फूलने पर व्यायाम बंद कर देना चाहिए, अन्यथा शरीर की नसें टेढ़ी होने का डर रहता है। व्यायाम करते समय सदा नाक से साँस लेनी चाहिए, मुँह से कदापि नहीं। व्यायाम करने के तुरंत उपरांत कभी नहाना नहीं चाहिए। इसके अलावा व्यायाम ऐसी जगह पर करना चाहिए जहाँ पर्याप्त वायु और प्रकाश हो। व्यायाम की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए अन्यथा अगले दिन व्यायाम करने की इच्छा नहीं होगी।

उपसंहार - व्यायाम उत्तम स्वास्थ्य पाने की मुफ्त औषधि है। इसके लिए बस इच्छाशक्ति और लगन की आवश्यकता होती है। हमें सवेरे देर तक सोने की आदत छोड़कर प्रतिदिन व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

## 7. अभ्यास का महत्व

अथवा

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

संकेत-बिंदु -

- भूमिका . अभ्यास की आवश्यकता
- अभ्यास और पशु-पक्षियों का जीवन
- सफलता का साधन-अभ्यास
- विद्यार्थी और अभ्यास
- उपसंहार

भूमिका - जीवन में सफलता पाने एवं किसी कार्य में दक्षता पाने के लिए बार-बार अभ्यास करना आवश्यक होता है। यह बात मनुष्य पर ही नहीं पशु-पक्षियों पर भी समान रूप से लागू होती है। कबूतर का शावक शुरू में चावल के दाने पर चोंच मारता है पर चोंच पत्थर पर टकराती है। बाद में वही पत्थरों के बीच पड़े चावल के दाने को एक ही बार में उठा लेता है।

अभ्यास की आवश्यकता - अत्यंत महीन और मुलायम तिनकों से बनी रस्सी के बार-बार आने-जाने से पत्थर से बनी कुँ की जगत पर निशान पड़ जाते हैं। इन्हीं निशानों को देखकर मंदबुद्धि कहलाने वाले बरदराज के मस्तिष्क में बिजली कौंध गई और उन्होंने परिश्रम एवं लगन से पढ़ाई की और संस्कृति के वैयाकरणाचार्य बन गए। कुछ ऐसा ही हाल कालिदास का था, जो उसी डाल को काट रहे थे जिस पर वे बैठे थे।

बाद में निरंतर अभ्यास करके संस्कृत के प्रकांड विद्वान बने और विश्व प्रसिद्ध साहित्य की रचना की। ऐसा ही लार्ड डिजरायली के संबंध में कहा जाता है कि जब वे ब्रिटिश संसद में पहली बार बोलने के लिए खड़े हुए तो 'संबोधन' के अलावा कुछ और न कह सके। उन्होंने हार नहीं मानी और जंगल में जाकर पेड़-पौधों के सामने बोलने का अभ्यास करने लगे। उनका यह अभ्यास रंग लाया और संसद में जब वे दूसरी बार बोलने के लिए खड़े हुए तो उनका भाषण सुनकर सभी सांसद चकित रह गए।

अभ्यास और पशु-पक्षियों का जीवन - अभ्यास की महत्ता से मानव जाति ही नहीं पशु-पक्षी भी परिचित हैं। मधुमक्खियाँ निरंतर परिश्रम और अभ्यास से फूलों का पराग एकत्र करती हैं और अमृत तुल्य शहद बनाती हैं। नन्हीं चींटी अनाज का टुकड़ा लेकर बारबार चलने का अभ्यास करती हैं और अंततः ऊँची चढ़ाई पर भी वह अनाज उठाए चलती जाती हैं। इस प्रक्रिया में कई बार अनाज उसके मुँह से गिरता है तो अनेक बार वह स्वयं गिरती है, परंतु वह हिम्मत हारे बिना लगी रहती है और अंततः सफल होती है। इसी तरह पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिए जगह-जगह से घास-फूस और लकड़ियाँ एकत्र करते हैं, फिर अत्यंत परिश्रम और अभ्यास से घोंसला बनाने में सफल हो जाते हैं।

सफल का साधन-अभ्यास - सफलता पाने के लिए निरंतर अभ्यास आवश्यक है। खिलाड़ी बरसों अभ्यास करता और मनचाही सफलता प्राप्त करता है। पृथ्वीराज चौहान, राजा दशरथ आदि वीरों द्वारा शब्दबेधी बाण चलाकर निशाना लगाना उनके निरंतर अभ्यास का ही परिणाम था। विज्ञान की सारी दुनिया ही अभ्यास पर टिकी है। विज्ञान की खोजें और अन्य आविष्कार निरंतर अभ्यास से ही संभव हो सके हैं। यहाँ एक खोज के लिए ही अभ्यास करते-करते पूरी उम्र निकल जाती है।

विद्यार्थी और अभ्यास - विद्यार्थियों के लिए अभ्यास की महत्ता अत्यधिक है। पुराने ज़माने में जब शिक्षा पाने का केंद्र गुरुकुल होते थे और शिक्षा प्रणाली मौखिक हुआ करती थी, तब भी विद्यार्थी अभ्यास से ही श्लोक और ग्रंथ याद कर लेते थे। कोरे कागज़ की तरह मस्तिष्क लेकर पाठशाला जाने वाले विद्यार्थी अभ्यास करते-करते अपने विषय में स्नातक, परास्नातक होकर डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त कर जाता है।

उपसंहार - अभ्यास सफलता का साधन है। सभी जीवधारियों को सफलता पाने हेतु आलस्य त्यागकर अभ्यास में जुट जाना चाहिए।

## 8. समय का महत्व

अथवा

समय चूकि वा पुनि पछताने

संकेत बिंदु -

- भूमिका
- समय सदा गतिमान
- समय बड़ा बलवान
- समय का पालन करती प्रकृति
- विद्यार्थी और समय का सदुपयोग
- उपसंहार

भूमिका - प्रकृति द्वारा मनुष्य को अनेकानेक वस्तुएँ प्रदान की गई हैं। इनमें कुछ ऐसी हैं जिनका मूल्य आँका जा सकता है और कुछ ऐसी हैं जिनके मूल्य का आँकलन नहीं किया जा सकता है। कुछ ऐसा ही है-समय, जिसका न तो मूल्य आँका जा सकता है और न वापस लौटाया जा सकता है।

समय सदा गतिमान - समय निरंतर गतिमान रहता है। उसे रोका नहीं जा सकता है। समय की गतिशीलता के बारे में ही कहा गया है। Time and tide wait for none. अर्थात् समय और समुद्री ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। जो व्यक्ति समय का लाभ नहीं उठाते हैं और अवसर आने पर चूक जाते हैं, या हाथ आए अवसर का लाभ नहीं उठा पाते हैं, वे पछताते रह जाते हैं। कहा गया है कि जो व्यक्ति समय को नष्ट करते हैं, समय उन्हें नष्ट कर देता है।

समय बड़ा बलवान - समय बड़ा बलवान माना जाता है। समय के आगे आज तक किसी की नहीं चली है। बड़े-बड़े योद्धा, राजा, धनसंपन्न व्यक्तियों की भी समय के सामने नहीं चल पाई। समय ने उन्हें भी अपना शिकार बना लिया। समय के साथ-साथ पेड़ों के पत्ते गिर जाते हैं, फल पककर शाखाओं का साथ छोड़ जाते हैं, और नीचे आ गिरते हैं।

समय का पालन करती प्रकृति - समय का महत्व भला प्रकृति से बढ़कर और कौन समझ पाया है। तभी तो प्रकृति के सारे काम समय पर होते हैं। सूर्य समय पर उगकर अँधेरा ही दूर नहीं करता, बल्कि धरती पर प्रकाश और ऊष्मा फैलाता है। मुरगा समय पर बाग देना नहीं भूलता है तो उचित ऋतु पाकर पौधों में नई पत्तियाँ आ जाती हैं। वसंतु ऋतु में पौधों पर फूल आ जाते हैं। छोटा पौधा जैसे ही बड़ा होता है वह फल देना नहीं भूलता है। गरमी के अंत तक बादल पानी लाकर धरती का कल्याण करना नहीं भूलते हैं, तो समय पर फ़सलें अनाज दिए बिना नहीं सूखती हैं।

महापुरुषों की सफलता का राज - ऋषि-मुनि रहे हों या अन्य महापुरुष अथवा सफलता के शिखर पर पहुँचे व्यक्ति, सभी की सफलता के मूल में समय का महत्व एवं उसके पल-पल का उपयोग करने का राज छिपा है। महात्मा गांधी, नेहरू जी, तिलक आदि ने समय के पल-पल का उपयोग किया। वैज्ञानिकों की सफलता में समय पर काम करने की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। इसी प्रकार मात्र एक मिनट के विलंब से स्टेशन पर पहुँचने वाले लोगों की ट्रेन छूट जाती है।

समय के दुरुपयोग का दुष्परिणाम - कुछ लोगों की आदत होती है कि वे व्यर्थ में समय गँवाते हैं। वे कभी आराम करने के नाम पर तो कभी मनोरंजन के नाम पर समय का दुरुपयोग करते हैं। इस प्रकार समय गँवाने वाले सुखी नहीं रह सकते हैं। कहा जाता है कि जूलियस सीजर सभा में पाँच मिनट विलंब से पहुँचा और उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। इसी प्रकार कुछ ही मिनट की देरी से युद्ध स्थल पर विलंब से पहुँचने वाले नेपोलियन को नेल्सन के हाथों हार का सामना करना पड़ा, जिसकी डिक्शनरी में असंभव शब्द था ही नहीं।

विद्यार्थी और समय का सदुपयोग - विद्यार्थी जीवन, मानवजीवन के निर्माण का काल होता है। इस काल में यदि विद्यार्थी में समय के पल-पल के उपयोग की आदत एक बार पड़ जाती है तो वह आजीवन साथ रहती है। जो विद्यार्थी समय पर शय्या का त्यागकर पढ़ाई करते हैं, उन्हें अच्छा ग्रेड लाने से कोई रोक नहीं सकता है।

उपसंहार - समय अमूल्य धन है। हमें भूलकर भी इस धन का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। इससे पहले कि और देर हो, हमें समय के सदुपयोग की आदत डाल लेनी चाहिए।

## 9. जनसंख्या विस्फोट

अथवा

### जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ

संकेत-बिंदु -

- भूमिका
- भारत में जनसंख्या की स्थिति
- जनसंख्या वृद्धि के कारण
- जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ
- जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय

- उपसंहार

भूमिका - एक सूक्ति है-'अति सर्वत्र वयते!' अर्थात् अति हर जगह वर्जित होती है। यह सूक्ति हमारे देश की जनसंख्या वृद्धि पर पूर्णतया लागू हो रही है। हाँ, जिस गति से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, अब उस पर अंकुश लगाने का समय आ गया है। इसमें विलंब करने का परिणाम अच्छा नहीं होगा।

भारत में जनसंख्या की स्थिति - हमारे देश की जनसंख्या में तीव्र दर से वृद्धि हुई है। आज़ादी के समय 50 करोड़ रहने वाली जनसंख्या दूने से अधिक हो चुकी है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश की जनसंख्या 120 करोड़ की संख्या पार गई थी। वर्तमान में यह बढ़ते-बढ़ते 122 करोड़ छूने लगी है। इतनी बड़ी जनसंख्या अपने आप में एक समस्या है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण - जनसंख्या वृद्धि के कारणों के मूल में जाने से ज्ञात होता है कि इस समस्या के एक नहीं अनेक कारण हैं। इनमें अशिक्षा मुख्य है। हमारे देश के ग्रामीण अंचलों की निरक्षर जनता आज भी अशिक्षा के कारण बच्चों को भगवान की देन मानकर इस पर नियंत्रण लगाने के लिए तैयार नहीं है। इन क्षेत्रों की धार्मिकता एवं धर्माधता के कारण जनसंख्या वृद्धि हो रही है। हिंदू धर्म में पुत्र को मोक्षदाता माना जाता है।

अपने एक मोक्षदाता को पाने के लिए वे कई-कई लड़कियाँ पैदा करते हैं और जनसंख्या वृद्धि रोकने को तैयार नहीं होते हैं। कई जातियों में व्याप्त बहुविवाह प्रथा के कारण भी जनसंख्या वृद्धि हो रही है। अशिक्षित तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव एवं अज्ञानता के कारण जनसंख्या वृद्धि होती रही है। गर्भ निरोधन के साधनों की जानकारी उन तक नहीं पहुँच पाती है।

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ - वास्तव में जनसंख्या वृद्धि एक समस्या न होकर अनेक समस्याओं की जड़ है। इसके कारण प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों तरह की समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। इनमें प्रमुख समस्या है-सुविधाओं का बँटवारा और कमी। देश में जितनी सुविधाएँ और संसाधन उपलब्ध हैं, वे देश की जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति करने में अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं। सरकार इन सुविधाओं को बढ़ाने के लिए योजना बनाती है और उनमें वृद्धि करती है, जनसंख्या में उससे अधिक वृद्धि हो चुकी होती है।

अतः संसाधनों की कमी बनी रह जाती है। बेरोज़गारी, गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, यातायात के साधनों की भीड़, सब जनसंख्या वृद्धि के कारण ही हैं। जनसंख्या की अधिकता के कारण ही व्यक्ति को न पेट भरने के लिए रोटी मिल रही है और न तन ढंकने के लिए वस्त्र। हर हाथ को काम मिलने की

बात करना ही बेईमानी होगी। अब भूखा और बेरोज़गार शांत बैठने से रहा। वह हर नैतिक-अनैतिक हथकंडे अपनाकर कार्य करता है और कानून व्यवस्था को चुनौती देता है। पर्यावरण प्रदूषण और वैश्विक ऊष्मीकरण भी जनसंख्या वृद्धि की देन है।

जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय - जनसंख्या की समस्या ने निपटने के लिए सरकार और समाज को मिलकर काम करना होगा। सरकार कानून बनाकर उसे ईमानदारी से लागू करवाए तथा युवा वर्ग इसकी हानियों पर विचार कर स्वयं ही समझदारी दिखाएँ।

उपसंहार-जनसंख्या वृद्धि देश, समाज और विश्व सबके लिए हानिकारक है। इसे रोकने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए। इसके लिए आज से ही सोचने की ज़रूरत है, क्योंकि कल तक तो बहुत देर हो चुकी होगी।

## 10. बढ़ती महँगाई-एक विकट समस्या

अथवा

### महँगाई की समस्या

संकेत-बिंदु

- भूमिका
- महँगाई के दुष्परिणाम
- सामाजिक समरसता के लिए घातक
- महँगाई वृद्धि के कारण
- महँगाई रोकने के उपाय
- उपसंहार

भूमिका - आज देश को जिन समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है, उनमें महँगाई सर्वोपरि है। यह ऐसी समस्या है जिससे मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर सभी पीड़ित हैं। गरीब और निम्न आयवर्ग के लोगों के लिए महँगाई जानलेवा बनी हुई है।

महँगाई के दुष्परिणाम - महँगाई के कारण उपयोग और उपभोग की हर वस्तु के दाम आसमान छूने लगते हैं। ऐसे में जनसाधारण की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पाती हैं। न भरपेट भोजन और न शरीर ढंकने के लिए वस्त्र, आवास की समस्या की बात ही क्या करना। उसका सारा ध्यान और शक्ति

प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने में ही निकल जाता है। उसे कला, संस्कृति, साहित्य, सौंदर्य बोध आदि के बारे में सोचने का समय नहीं मिल पाता है। ऐसे में व्यक्ति की स्थिति 'साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् नर पुच्छ विषाण हीनः' की होकर रह जाती है। ऐसा लगता है कि उसका जीवन आर्थिक समस्याओं से जूझने में ही बीत जाता है।

सामाजिक समरसता के लिए घातक - महँगाई के कारण जब समाज को रोटी मिलना कठिन हो जाता है तो वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। समाज में छीना-झपटी, लूटमार की स्थिति बन जाती है। ऐसे में सामाजिक समरसता का ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो जाता है। इसके अलावा समाज में कानून व्यवस्था की चुनौती उत्पन्न हो जाती है।

महँगाई वृद्धि के कारण - महँगाई बढ़ाने के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। इनमें जनसंख्या वृद्धि प्रमुख कारण है। अर्थशास्त्र का एक सिद्धांत है कि जब वस्तु की माँग बढ़ती है तो उसके मूल्य में वृद्धि हो जाती है। ऐसे में 'एक अनार सौ बीमार' वाली स्थिति उत्पन्न हो जाती है। बढ़ती जनसंख्या की माँग पूरा करने के लिए जब वस्तुओं की कमी होती है तो महँगाई बढ़ने लगती है।

कुछ व्यापारियों की लोभ प्रवृत्ति भी महँगाई बढ़ाने के लिए उत्तरदायी होती है। ऐसे व्यापारी अधिक लाभ कमाने के लिए वस्तुओं की जमाखोरी करते हैं और कृत्रिम कमी दिखाकर वस्तुओं का मूल्य बढ़ा देते हैं, और बाद में बड़े दामों पर बेचते हैं।

मौसम की मार, प्राकृतिक आपदा आदि के कारण जब फ़सलें नष्ट होती हैं, तो महँगाई बढ़ जाती है। इसके अलावा सरकार की कुछ नीतियों के कारण भी महँगाई बढ़ती जाती है।

महँगाई रोकने के उपाय - महँगाई वह समस्या है जिससे देश की बहुसंख्यक जनता दुखी है। ऐसे में महँगाई रोकने के लिए सरकार को प्राथमिकता के आधार पर कदम उठाना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह जमाखोरों तथा कालाबाज़ारी करने वालों के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करे और जमाखोरी की वस्तुओं का वितरण सार्वजनिक प्रणाली के अनुसार करे।

जिन वस्तुओं के मूल्य में अचानक उछाल आ रहा हो उनका आयात करके जनता में वितरित करवाना चाहिए तथा लोगों से धैर्य बनाए रखने की अपील करनी चाहिए। राजनीतिज्ञों को चाहिए कि वे चुनाव में खर्च को कम करें, काले धन का प्रयोग न करें। चुनाव का खर्च बढ़ने पर तथा 'येन केन प्रकारेण' चुनाव जीतने की लालसा के कारण वे बेतहाशा पैसा खर्च करते हैं। उन्हें इस प्रवृत्ति पर स्वयं अंकुश लगाने की ज़रूरत है।



उपसंहार - महँगाई व्यक्ति का जीना मुश्किल कर देती है। भूखा व्यक्ति अपनी जठराग्नि शांत करने के लिए कुछ भी करने के लिए तत्पर हो जाता है। समाज के अमीर वर्ग को उदारता एवं दयालुता का परिचय देकर दीन-हीनों की मदद कर महँगाई की मार से उन्हें बचाने के लिए आगे आना चाहिए।

## 11. अच्छा पड़ोस

अथवा

### अच्छा पड़ोस कितना आवश्यक

संकेत-बिंदु -

- भूमिका
- पड़ोसी का महत्त्व
- पड़ोसी से हमारा व्यवहार
- पड़ोसी से व्यवहार खराब होने के कारण
- महानगरों का पड़ोस

भूमिका - मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह लोगों के साथ मिल-जुलकर रहता है। वह अपना दुख-सुख दूसरों को बताता है और उनके सुख-दुख में शामिल होता है। ऐसे में जो व्यक्ति उसके सबसे निकट होता है और उसके सुख-दुख में तुरंत हाज़िर हो जाता है, वह है उसका पड़ोसी। कहते हैं कि अच्छा पड़ोसी किस्मत वालों को ही मिलता है।

पड़ोसी का महत्त्व - जीवन में दुख-सुख का आना-जाना लगा रहता है। व्यक्ति को दुख के समय मददगार व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में पड़ोसी ही हमारा निकटतम रिश्तेदार एवं मददगार होता है। अच्छा पड़ोसी मिलने से जिंदगी चैन से कट जाती है, जबकि बुरा पड़ोसी सिरदर्द बन जाता है।

पड़ोसी से हमारा व्यवहार - एक लोकोक्ति है कि ताली दोनों हाथों से बजती है। अर्थात् पड़ोसी हमारे साथ अच्छा व्यवहार करे इसके लिए आवश्यक है कि हम भी उसके साथ अच्छा व्यवहार करें। हमारे व्यवहार में स्वार्थभाव आने पर संबंधों में किसी भी समय कटुता आने की स्थिति बन जाती है। हमें पड़ोसी के साथ यथासंभव निःस्वार्थ व्यवहार करना चाहिए। हमें पड़ोसी के दुख-सुख में अवश्य शामिल होना चाहिए। हमें उसकी विपत्ति और संकट को अपना दुख मानकर उसके समाधान का प्रयास करना चाहिए। हमें हर स्थिति में पड़ोसी से संबंध बनाकर रखना चाहिए। ऐसा करना हमारे लिए हितकर होता है। कभी-कभी अनजान लोगों के मन में वही छवि बन जाती है जो हमारा पड़ोसी उनसे बता देता है।

पड़ोसी से व्यवहार खराब होने के कारण - पड़ोसी के साथ व्यवहार खराब होने के लिए जो बातें अक्सर सामने आती हैं, उनमें प्रमुख हैं-हमारा स्वार्थभरा व्यवहार। ऐसा हम पड़ोसी से रोजमर्रा की वस्तुएँ माँगकर करते हैं। कभी चीनी, कभी चाय और कभी कुछ और। अक्सर हम उनका अखबार माँगकर तो पढ़ते हैं, पर उसे लौटाना भूल जाते हैं। ऐसी स्थिति उन्हें बुरी तो लगती है पर वे चाहकर भी कुछ कह नहीं पाते हैं। इसके अलावा गली में खेलने या अपने घर में खट-पट करने पर अक्सर पड़ोसी के बच्चों को डाँट-फटकार देते हैं। यह व्यवहार पड़ोसी को बिल्कुल नहीं सुहाता है। इसके अलावा अक्सर रुपये की माँग जब पड़ोसी से कर बैठते हैं और समय पर नहीं लौटाते हैं, तो व्यवहार खराब होना तय समझ लेना चाहिए।

महानगरों का पड़ोस - महानगरों का जीवन अत्यंत व्यस्त होता है। लोगों को अपने काम से अवकाश नहीं होता है। इसके अलावा शहर के लोग ज़्यादा आत्मकेंद्रित होते हैं। इस कारण वे पड़ोस की ओर ध्यान नहीं देते हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि पड़ोसी के घर में चोरी या कोई दुर्घटना हो जाती है तो कई घंटे तक पता ही नहीं चल पाता है या हम उदासीन बने रहते हैं। इस भौतिकवादी युग में लोगों की बढ़ती स्वार्थ प्रवृत्ति ने पड़ोस के मायने ही बदलकर रख दिया है। हमारी आधुनिक बनने की सोच ने भी पड़ोस धर्म पर असर डाला है। इससे हम अपनी पुरानी बातें और मान्यताएँ बदलते जा रहे हैं। आधुनिक होने के साथ-साथ यह आवश्यक है कि हम पड़ोसी धर्म निभाना भी सीखें।

उपसंहार-हम एक अच्छे पड़ोसी बनें, इनके लिए हमें सहनशील बनना होगा। हमें पड़ोसी या उसके बच्चों की छोटी-छोटी बातों की उपेक्षा करके सद्भाव बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर लड़ते रहने से अच्छा पड़ोस बनने से रहा। अतः हमें अपना व्यवहार सुधारकर अच्छा पड़ोसी बनने की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए।

## 12. आधुनिक समाज में नारी

अथवा

समाज में नारी की बदलती भूमिका

संकेत-बिंदु -

- भूमिका
- प्राचीन काल में नारी की स्थिति
- मध्यकाल में नारी की स्थिति
- आधुनिक काल में नारी
- नारी में बढ़ी आत्मनिर्भरता

भूमिका - स्त्री और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। आदिकाल से ही ये दोनों पहिए मिलकर जीवन की गाड़ी को सुचारु रूप से खींचते आए हैं। समय बदलने के साथ ही स्त्री की स्थिति में बदलाव आता गया। उसकी सीमा अब घर के अंदर तक ही सीमित नहीं रही। वह घर-परिवार के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करती नज़र आती है।

प्राचीन काल में नारी की स्थिति - प्राचीन काल में नारी को मनुष्य के समान ही समानता का दर्जा प्राप्त था। भले ही उस समय शिक्षा का प्रचार-प्रसार अधिक नहीं था, परंतु स्त्रियों को दबाए रखने का प्रचलन भी नहीं था। उस समय स्त्रियाँ घर के काम-काज करती थीं। वे पुरुष द्वारा कमाए धन को संभालती थीं। खाना बनाने जैसे घरेलू कार्य तथा बच्चों की देखभाल का काम उनके जिम्मे रहता था। पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन आदि में वे पुरुषों का साथ देती थीं।

मध्यकाल में नारी की स्थिति - मध्यकाल आते-आते नारी की स्थिति में बदलाव आता गया। इस समय देश को आक्रमण और युद्धों का सामना करना पड़ रहा था। नारी को आतताइयों के हाथों में पड़ने से बचाने के लिए उस परदे में रखा जाने लगा। उसे घर की चार दीवारी में कैद कर दिया गया। मुगलकाल में परदा प्रथा और बाल-विवाह की कुप्रथा की वृद्धि हुई। इस काल में नारी को शिक्षा से वंचित रखकर उसे उपभोग की वस्तु बना दिया गया।

आधुनिक काल में नारी - अंग्रेज़ी शासनकाल के उत्तरार्ध से नारी की स्थिति में सुधार आना शुरू हो गया। सावित्री बाई फुले एवं ज्योतिबा फुले ने नारी की शिक्षा के लिए जो प्रयास किया था, वह स्वतंत्रता के बाद रंग लाने लगा। सरकारी प्रयासों से नारी शिक्षा एवं उसके स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए अनेक ठोस कदम उठाए गए और योजनाबद्ध तरीके से काम किया गया। इसका परिणाम भी सामने आने लगा।

आधुनिक काल में नारी पुरुषों की भाँति उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है। वह विभिन्न कौशलों का शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। आज नारी घर की सीमा लाँघकर स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, अस्पताल, बैंक, उड्डयन क्षेत्र आदि में अपनी योग्यतानुसार कार्य कर रही है। इतना ही नहीं, राजनीति, वैज्ञानिक संस्थान खेल जगत, सेना, पुलिस, पर्वतारोहण, विमानन, पर्यटन आदि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ नारी के कदम न पहुँचे हों। आज स्थिति यह है कि नारी द्वारा नौकरी करने के कारण पुरुष बेरोज़गारी में वृद्धि हुई है।

नारी में बढ़ी आत्मनिर्भरता - नारी की शिक्षा और नौकरी ने उसके आत्मविश्वास में वृद्धि की है। इससे वह पुरुषों की निरंकुशता से मुक्त हो रही है। नौकरी के कारण वेतन उसके हाथ में आया है। इस आर्थिक स्वावलंबन ने उसके आत्मविश्वास में वृद्धि की है। अब पुरुषों के समान ही अपनी कार्यक्षमता से समाज को प्रभावित कर रही है। कुछ रुढ़िवादी और परंपरागत सोच-विचार वाले पुरुष जिन्हें उसकी कार्यक्षमता

और कौशल पर विश्वास न था, वे चकित होकर उसे देख ही नहीं रहे हैं, बल्कि उसकी योग्यता के कायल भी हो रहे हैं।

अब तो सरकार ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में पुरुष और महिला का वेतनमान बराबर कर दिया है। कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं, जहाँ महिलाएं पुरुषों से भी दो कदम आगे बढ़कर काम कर रही हैं। उनकी कार्यकुशलता देखकर पुरुष समाज नारी के प्रति अपनी बनी-बनाई परंपरागत सोच में बदलाव लाना शुरू कर दिया है।

उपसंहार-इसमें कोई संदेह नहीं कि आज समाज में नारी की स्थिति उन्नत हुई है। अब पुरुषों को यह ध्यान रखना है कि कार्यालय में काम करने के बाद उसे घर की चक्की में पिसने के लिए विवश न करे। यथासंभव घर में नारी का साथ देकर घरेलू कार्यों और जिम्मेदारियों में हाथ बटाएँ तथा उसे सम्मान की दृष्टि से देखने का प्रयास करें।

### 13. कंप्यूटर के लाभ अथवा कंप्यूटर-आज की आवश्यकता

संकेत-बिंदु -

- भूमिका
- कंप्यूटर-एक बहुउपयोगी यंत्र
- शिक्षण कार्यों में कंप्यूटर
- बैंकों में कंप्यूटर
- विभिन्न कार्यालयों में कंप्यूटर
- व्यक्तिगत उपयोग
- कंप्यूटर से हानियाँ
- उपसंहार

भूमिका-विज्ञान ने मनुष्य को ऐसे अनेक उपकरण प्रदान किए हैं जिनकी कभी वह कल्पना किया करता था। इन उपकरणों ने मानव-जीवन को नाना प्रकार से सुखमय बनाया है। ये उपकरण इनते उपयोगी हैं कि वे मनुष्य की आवश्यकता बनते जा रहे हैं। इन्हीं उपकरणों में एक है-कंप्यूटर। कंप्यूटर विज्ञान का चमत्कारी यंत्र है।

कंप्यूटर-एक बहुउपयोगी यंत्र - कंप्यूटर का आविष्कार विज्ञान के चमत्कारों में से एक है। यह ऐसा यंत्र है जिसका उपयोग लगभग हर जगह किया जाता है। यह व्यक्तिगत उपयोग में लाया जा रहा है। शायद ही ऐसा कोई कार्यालय हो जहाँ किसी न किसी रूप में इसका उपयोग किया जा रहा है। अब इसे लाना-ले जाना भी सुगम होता जा रहा है, क्योंकि इसके मॉडल में बदलाव आता जा रहा है।

शिक्षण कार्यों में कंप्यूटर - आने वाले समय में शिक्षण का अधिकांश कार्य कंप्यूटर से किया जाने लगेगा। यद्यपि प्रोजेक्टर के माध्यम से आज भी विभिन्न कोर्सों की पढ़ाई कंप्यूटर से करवाई जा रही है तथा छात्र-छात्राएँ इसकी मदद से प्रोजेक्ट बनाने आदि का काम कर रहे हैं, पर आने वाले समय में छात्रों को बस्ते के बोझ से मुक्ति मिल जाएगी। उनकी सारी पुस्तकें और पाठ्यसामग्री कंप्यूटर पर ही उपलब्ध हो जाएगी। अब वह समय भी दूर नहीं जब शिक्षक भी कंप्यूटर ही होगा। वह छात्रों को निर्देश देकर विभिन्न विषयों की पढ़ाई करवाएगा। आज भी छात्र अपनी मोटी-मोटी पुस्तकें पी.डी.एफ.फार्म में करके कंप्यूटर से पढ़ाई कर रहे हैं।

बैंकों में कंप्यूटर - कंप्यूटर बैंकिंग क्षेत्र के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। अब कंप्यूटर के कारण क्लर्कों को न हाथ से काम करना पड़ रहा है और न फाइलें और लेजर सँभालने का झंझट रहा। सभी ग्राहकों के खाते अब कंप्यूटर की फाइलों में सिमट आए हैं। कंप्यूटर में न इनके खोने का डर है और न चूहों के काटने का। इसके अलावा एक कंप्यूटर कई-कई क्लर्कों का काम बिना थके करता है। कंप्यूटर न तो हड़ताल करता है और वेतन बढ़ाने के लिए कहता है। यह ऐसा यंत्र है जो बिना गलती किए अधिकाधिक कार्य कम से कम समय में पूरा कर देता है।

विभिन्न कार्यालयों में कंप्यूटर - कंप्यूटर अपनी उपयोगिता के कारण हर सरकारी और प्राइवेट कार्यालयों में प्रयोग किया जाने लगा है। आज इसे वैज्ञानिक, आर्थिक युद्ध, ज्योतिष, मौसम विभाग, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में प्रयोग में लाया जा रहा है। इसका प्रयोग बिल बनाने, कर्मचारियों के वेतन, पी.एफ. का हिसाब रखने, खातों के संचालन आदि में खूब प्रयोग किया जा रहा है। इसी प्रकार रेलवे, वायुयान, समुद्री जहाजों के संचालन के लिए भी कंप्यूटर की मदद ली जा रही है।

व्यक्तिगत उपयोग - आज कंप्यूटर का व्यक्तिगत उपयोग व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। छात्र इसका उपयोग पढ़ाई के लिए कर रहे हैं, तो चित्रकार और कलाकार इसका प्रयोग अपनी कला को निखारने के लिए कर रहे हैं। गीत-संगीत की रिकॉर्डिंग और संकलन का कार्य कंप्यूटर से बखूबी किया जा रहा है। कंप्यूटर से हानियाँ-कंप्यूटर का एक पक्ष जितना उजला है, दूसरा पक्ष उतना ही श्याम भी है। 'अति सर्वत्र वयंते' की उक्ति इस पर पूरी तरह लागू होती है। इसका अधिक उपयोग मोटापा बढ़ाता है। इस पर ज्यादा

देर काम करना आँख और कमर के लिए हानिकारक होता है। इसके अलावा इस पर सारी गणनाएँ सरलता से हो जाने के कारण अब मौखिक दक्षता और याद करने की क्षमता में कमी आने लगी है।

उपसंहार - कंप्यूटर अद्भुत तथा अत्यंत उपयोगी यंत्र है, पर इसका अधिक प्रयोग हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इसका प्रयोग व्यक्ति को आत्मकेंद्रित बनाता है। इसका आवश्यकतानुसार सोच-समझकर प्रयोग करना चाहिए।

**\*-अनुच्छेद-लेखन:-**

### 1-पराधीनता-एक अभिशाप

संकेत बिंदु-

- पराधीनता का आशय
- पराधीनता-एक अभिशाप
- पराधीनता से मुक्ति का साधन-त्याग एवं बलिदान

‘पराधीनता’ शब्द ‘पर’ और ‘अधीनता’ के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-दूसरों की अधीनता। अर्थात् हमारा जीवन, व्यवहार, कार्य आदि दूसरों की इच्छा पर निर्भर होना। वास्तव में पराधीनता एक अभिशाप है। पराधीन मनुष्य की जिंदगी उसी तरह हो जाती है, जैसे-पिंजरे में बंद पक्षी। ऐसा जीवन जीने वाला मनुष्य सपने में भी सुखी नहीं हो सकता है। उसे दूसरों का गुलाम बनकर अपनी इच्छाएँ और मन मारकर जीना होता है। पराधीन व्यक्ति को कितनी भी सुविधाएँ क्यों न दी जाए वह सुखी नहीं महसूस कर सकता है क्योंकि उसकी मानसिकता गुलामों जैसी हो चुकी होती है।

पराधीन व्यक्ति का मान-सम्मान और स्वाभिमान सभी कुछ नष्ट होकर रह जाता है। पराधीनता से मुक्ति पाने का साधन त्याग एवं बलिदान है। हमारा देश भी अंग्रेजों की पराधीनता झेल रहा था, परंतु क्रांतिकारी एवं देशभक्त युवाओं ने अपना सब कुछ त्याग कर स्वयं को संघर्ष की आग में झोंक दिया। उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार सहे, जेलों में प्राणांतक यातनाएँ सही। हज़ारों-लाखों ने अपनी कुरबानी दी। यह संघर्ष रंग लाया और हमें पराधीनता के अभिशाप से मुक्ति मिली। अब स्वतंत्र रहकर अभावों में भी सुख का अनुभव करते हैं।

### 2-विद्यार्थी जीवन

संकेत बिंदु-

- जीवन निर्माण का काल
- विद्यार्थी के लक्षण
- विद्यार्थी के कर्तव्य

हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन को चार भागों में बाँट दिया था। इनमें जीवन के जिस आरंभिक पच्चीस वर्ष को 'ब्रह्मचर्य' के नाम से जाना था, उसी को आज विद्यार्थी जीवन कहने में कोई विसंगति न होगी। इसी काल में बालक तरह-तरह की विद्याएँ, संस्कार और सदाचार की बातें सीखता है, अतः यह जीवन-निर्माण का काल होता है। इस समय बालक जो कुछ भी सीखता है, चाहे अच्छा या बुरा, उसका प्रभाव जीवन भर रहता है। इन्हीं गुणों पर व्यक्ति का भविष्य निर्भर करता है। विद्यार्थी जीवन विद्यार्जन का काल होता है।

इसके लिए नम्रता, जिज्ञासा, सेवा तथा कर्तव्य भावना आवश्यक है। इस समय उसे कौए-सी चेष्टा, बगुले-सा ध्यान, कुत्ते-सी निद्रा, कम भोजन करने वाला तथा घर-परिवार की मोहमाया से दूर रहने वाला होना चाहिए। जो विद्यार्थी आलस्य करते हैं या असंयमित आचरण के शिर हो जाते हैं वे सफलता से दूर रह जाते हैं। अतः विद्यार्थियों को विनम्र, जिज्ञासु, संयमी, परिश्रमी तथा अध्यवसायी बनना चाहिए। उसके जीवन में सादगी और विचारों की महानता होने पर वह उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करता है।

### 3-महानगरीय जीवन-एक वरदान या अभिशाप

संकेत बिंदु-

- शहरों की ओर बढ़ते कदम
- दिवास्वप्न
- वरदान रूप
- महानगरीय जीवन-एक अभिशाप

आदिकाल में जंगलों में रहने वाले मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गईं। उसने इन आवश्यकताओं की पूर्ति का केंद्र शहर प्रतीत हुए और उसने शहरों की ओर कदम बढ़ा दिए। महानगरों का अपना विशेष आकर्षण होता है। यही चमक-दमक गाँवों में या छोटे शहरों में रहने वालों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। उसे यहाँ सब कुछ आसानी से मिलता प्रतीत

होता है। इसी दिवास्वप्न को देखते हुए उसके कदम महानगरों की ओर बढ़े चले आते हैं। इसके अलावा वह रोज़गार और बेहतर जीवन जीने की लालसा में इधर चला आता है।

धनी वर्ग के लिए महानगर किसी वरदान से कम नहीं। उनके कारोबार यहाँ फलते-फूलते हैं। कार, ए.सी., अच्छी सड़कें, विलासिता की वस्तुएँ, चौबीसों घंटे साथ निभाने वाली बिजली यहाँ जीवन को स्वर्गिक आनंद देती हैं। इसके विपरीत गरीब आदमी का जीवन यहाँ दयनीय है। रहने को मलिन स्थानों पर झुगियाँ, चारों ओर फैली गंदगी, मिलावटी वस्तुएँ, दूषित हवा, प्रदूषित पानी यहाँ के जीवन को नारकीय बना देते हैं। ऐसा जीवन किसी अभिशाप से कम नहीं।

#### 4-ऋतुराज-वसंत

संकेत बिंदु-

- ऋतुराज क्यों
- जड़-चेतन में नवोल्लास
- स्वास्थ्यवर्धक ऋतु
- वसंत ऋतु के त्योहार

हमारे देश भारत में छह ऋतुएँ पाई जाती हैं। इनमें से वसंत को ऋतुराज कहा जाता है। इस काल में न शीत की अधिकता होती है और न ग्रीष्म का तपन। वर्षा ऋतु का कीचड़ और कीट-पतंगों का आधिक्य भी नहीं होता है। माघ महीने की शुक्ल पंचमी से फाल्गुन पूर्णिमा तक ही यह ऋतु बहुत-ही सुहावनी होती है। इस समय पेड़-पौधों में नवांकुर फूट पड़ते हैं। लताओं पर कलियाँ और फूल आ जाते हैं। चारों दिशाओं में फूलों की सुगंध, कोयल कूक तथा वासंती हवा की सरसर से वातावरण उल्लासमय दिखता है। इस ऋतु का असर बच्चों, युवा, प्रौढ़ों और वृद्धों पर दिखता है।

उनका तन-मन उल्लास से भर जाता है। यह ऋतु स्वास्थ्यवर्धक मानी गई है। स्वास्थ्य के अनुकूल जलवायु, सुंदर वातावरण तथा प्राणवायु की अधिकता के कारण संचार बढ़ जाता है। इससे मन में एक नया उल्लास एवं उमंग भर उठता है। वसंत पंचमी, होली इस ऋतु के त्योहार हैं। वसंत पंचमी के दिन ज्ञानदायिनी सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है तथा होली के दिन रंगों में सराबोर हम खुशी में डूब जाते हैं।



## 5-बदलती दुनिया में पीछे छूटते जीवन मूल्य

संकेत बिंदु-

- संसार परिवर्तनशील
- बदलाव का प्रभाव
- खोते नैतिक मूल्य

यह संसार परिवर्तनशील है। यह पल-पल परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण कल तक जो नया था वह आज पुराना हो जाता है। कुछ ही वर्षों के बाद दुनिया का बदला रूप नज़र आने लगता है। इस परिवर्तन से हमारे जीवन मूल्य भी अछूते नहीं हैं। इन जीवन मूल्यों में बदलाव आता जा रहा है। इससे व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल रहा है। यह बदलाव व्यक्ति के व्यवहार में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान की खोजों के कारण हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है। पैदल और बैलगाड़ी पर सफ़र करने वाला मनुष्य वातानुकूलित रेलगाड़ियों और तीव्रगामी विमानों से सफ़र कर रहा है। हरकोर और कबूतरों से संदेश भेजने वाला मनुष्य आज टेलीफ़ोन और तार की दुनिया से भी आगे आकर मोबाइल फ़ोन पर आमने-सामने बातें करने लगा है।

दुर्भाग्य से हमारे जीवन मूल्य इस प्रगति में पीछे छूटते गए। कल तक दूसरों के लिए त्याग करने वाला, अपना सर्वस्व दान देनेवाला मनुष्य आज दूसरों का माल छीनकर अपना कर लेना चाहता है। परोपकार, उदारदता, मित्रता, परदुःखकातरता, सहानुभूति, दया, क्षमा, साहस जैसे मूल्य जाने कहाँ छूटते जा रहे हैं। हम स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं।

## 6-सच्चा मित्र

अथवा

विपत्ति कसौटी जे कसे ते ही साँचे मीत

संकेत बिंदु-

- मित्र की आवश्यकता क्यों

- सच्चे मित्र के गुण
- मित्र चयन में सावधानियाँ
- सच्चे मित्र कौन?

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसके जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं। वह अपनी बातें दूसरों को बताकर दुख कम करना चाहता है। ऐसे में उसे एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत पड़ती है तो उसका सच्चा हमराज़ बन सके, उसके सुख-दुख में साथ दे। इन्हें ही मित्र कहा जाता है। एक सच्चा मित्र औषधि के समान होता है जो व्यक्ति की हर दुख-तकलीफ को हर लेता है। वह आपत्ति के समय व्यक्ति को अकेला नहीं छोड़ता है। वह अपने मित्र के कुमार्ग पर बढ़ते कदमों को रोककर सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है। वह अपने मित्र की कटु बातों को मन पर नहीं लेता है तथा मित्र की भलाई के विषय में ही सदैव सोचता है। मित्र का चयन करते समय सावधान रहना चाहिए।

चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले, विपत्ति के समय न टिकने वाले मित्रों से सावधान रहना चाहिए। ऐसे लोग संकटकाल में अपने मित्र को उसी प्रकार छोड़ देते हैं; जैसे-जाल पड़ने पर पानी मछलियों का साथ छोड़ देता है। आज कपटी मित्रों की भी कमी नहीं। अतः इनसे सदैव सावधान रहने की ज़रूरत है। विपत्ति के समय साथ देने वाले, निःस्वार्थ मदद करने वाले, की हुई मदद का गान न करने वाले हमारे सच्चे मित्र होते हैं।

## 7-देश हमारा सबसे प्यारा

संकेत बिंदु-

- भारत का नामकरण
- प्राकृतिक सौंदर्य
- अनेकता में एकता
- प्राचीन परंपरा
- वर्तमान में भारत

स्वर्ग के समय जिस धरा पर मैं रहता हूँ, दुनिया उसे भारत के नाम से जानती-पहचानती है। प्राचीन काल में यहाँ आर्यों (सभ्य) का निवास था, इस कारण इसे आर्यावर्त कहा जाता था। प्राचीन साहित्य में इसे जंबूद्वीप के नाम से भी जाना जाता था। कहा जाता है कि प्रतापी राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रतापी पुत्र भरत के नाम पर इसका नाम भारत पड़ा। भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अप्रतिम है। यहाँ छह ऋतुएँ

बारी-बारी से आकर अपना सौंदर्य बिखरा जाती हैं। इसके उत्तर में मुकुट रूप में हिमालय है। दक्षिण में सागर चरण पखारता है। गंगा-यमुना जैसी पावन नदियाँ इसके सीने पर धवल हार की भांति प्रवाहित होती हैं। यहाँ के हरे-भरे वन इस सौंदर्य को और भी बढ़ा देते हैं। यहाँ विभिन्न भाषा-भाषी, जाति-धर्म के लोग रहते हैं।

उनकी वेषभूषा, रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाजों में पर्याप्त अंतर है फिर भी हम सभी भारतीय हैं और मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ की परंपरा अत्यंत प्राचीन, महान और समृद्धशाली है। भारतीय संस्कृति की गणना प्राचीनतम संस्कृतियों में की जाती है। वर्तमान में भारत को स्वार्थपरता, आतंकवाद, गरीबी, निरक्षरता आदि का सामना करना पड़ रहा है तथा मानवीय मूल्य कहीं खो गए-से लगते हैं। नेताओं की स्वार्थलोलुपता ने रही-सही कसर पूरी कर दी है, फिर भी हमें निराश होने की जरूरत नहीं है। भारत एक-न-एक दिन अपना खोया गौरव अवश्य प्राप्त करेगा।

## 8-इंटरनेट का उपयोग

संकेत बिंदु-

- इंटरनेट क्या है
- इंटरनेट के लाभ
- उपयोग में सावधानियाँ

इंटरनेट को विज्ञान की अद्भुत देन कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। वास्तव में इंटरनेट सूचनाओं एवं जानकारियों का विस्तृत जाल है। इसमें एक-दो नहीं करोड़ों पन्नों की जानकारी भरी है। इंटरनेट की मदद से हम अपनी इच्छित जानकारी और जिज्ञासा का हल कुछ ही पल में कंप्यूटर की मदद से पा सकते हैं। इसकी सहायता से हम कुछ ही क्षण में दुनिया से जुड़ जाते हैं। अपने विचित्र गुण के कारण इंटरनेट अत्यंत तेजी से युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रहा है। यह ऐसा माध्यम है जिसमें संचार के लगभग साधनों के गुण समाए हैं। इंटरनेट अपने आप में विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें दुर्लभ जानकारियों से भरी अनेकानेक पुस्तकें समायी हैं। इसकी पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक है।

इंटरनेट बहु उपयोगी साधन है। इसके माध्यम से मनोवांछित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तो घर बैठे सिनेमा या हवाई जहाज़ के टिकट बुक करवा सकते हैं। यह पढ़ने लिखने वालों तथा शोधकर्ताओं के लिए वरदान है। इंटरनेट का सावधानीपूर्वक उपयोग न करने पर इसके दुरुपयोग की संभावना रहती है। इंटरनेट

की अश्लील सामग्री से युवाओं का कोमल मन दिग्भ्रमित हो रहा है। विवेकपूर्वक उपयोग करने पर यह वरदान सरीखा है।

**\*-पत्र-लेखन:-**

**१-अपने मित्र को अपने भाई की शादी में आमंत्रित करने के लिए एक पत्र लिखें।**

अ ब स अपार्टमेंट  
लोधी रोड  
नई दिल्ली

29 सितंबर, 2019

प्रिय दीपिका,

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करती हूँ वहाँ भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मेरे भाई की शादी इसी साल दिसंबर में हो रही है। क्या आपको पिछले साल मेरे जन्मदिन की पार्टी में शिरकत करने आए उनकी दोस्त याद है? यह वही लड़की है। वे तब से एक-दूसरे को जानते हैं। अब दोनों ने माता-पिता की सहमति से शादी के बंधन में बंधने का फैसला किया है और इस अवसर पर दोनों परिवार खुश हैं। आप सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम 10 दिसंबर से शुरू होगी और 15 दिसंबर तक चलेगी। सतःल वही 'महराजा फोर्ट' है जहाँ हमने आपके चचेरे भाई की शादी में शिरकत की थी। मैं आपसे एक सप्ताह पहले पहुंचने का अनुरोध करती हूँ ताकि हम एक साथ योजना बना सकें और खरीदारी कर सकें। मैं जानती हूँ कि आप भी उतनी ही उत्साहित होंगी जितना कि मैं हूँ। मेरी मां ने पहले ही आपके परिवार से संपर्क किया है और उन्हें समारोह की तारीख, समय और स्थान के बारे में सूचित किया है। आप सभी से निवेदन है कि सुंदर क्षण में उपस्थित रहें। लेकिन यह मेरे सबसे अच्छे दोस्त के लिए मेरा व्यक्तिगत निमंत्रण है। अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालें क्योंकि किसी भी बहाने अनुमति नहीं है।

तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रही हू। आपसे मिलने की उम्मीद है।

तुम्हारा सहेली  
य र ल

**2-अपने मित्र को लगभग 150 शब्दों में अपने बोर्डिंग स्कूल के अनुभव का वर्णन करते हुए एक पत्र लिखें।**

अ ब स अपार्टमेंट  
लोधी रोड  
नई दिल्ली

29 सितंबर, 2019

प्रिय मित्र

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहाँ भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

जैसा कि आप जानते हैं कि मुझे एक बोर्डिंग स्कूल में प्रवेश मिला है। मैं अपने शुरुआती दिनों के अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता था। पहले मुझे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि मैं बचपन से अपने परिवार से कभी दूर नहीं हुआ हूँ। लेकिन हम अपने आप को एक छोटी सी दुनिया में कैद नहीं कर सकते हैं जो हमारे आराम के स्तर से मेल खाता है। मैं उस समय आपकी कीमती सलाह के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ जब मुझे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। आपने कहा था कि हमें परिसर में आए बिना निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए। आपके शब्द वास्तव में उत्साहजनक थे।

उस समय यह एक साहसिक निर्णय लगता था लेकिन अब मैं धीरे-धीरे और खुशी से नए वातावरण के प्रति सजग हो रहा हूँ। समय बीतने के साथ मुझे महसूस हुआ कि यहाँ का स्टाफ इतना समझदार और सहयोगी है। मुझे उनके साथ समायोजित होने में आसानी हुई। यहाँ पढ़ाने का तरीका बहुत प्रभावशाली है और मेरे पिछले स्कूल से बिल्कुल अलग है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों पर अधिक ध्यान विभिन्न ब्लॉकों से दोस्त बनाने में बहुत मदद करता है। मुझे लगने लगा है कि मैं अब इस संस्था का हिस्सा हूँ। मेरे नए स्कूल के बारे में साझा करने के लिए बहुत कुछ है जब हम मिलेंगे।

बेसब्री से इंतजार है जल्द ही आपको देखने का।

तुम्हारा दोस्त  
अभिनव

**3-अपने मित्र को एक पत्र लिखें जो सिर्फ एक दुर्घटना के साथ मिला, जो उसे लगभग 150 शब्दों में एक सांत्वना भरे स्वर में उसकी त्वरित वसूली के बारे में सूचित करता है।**

अ ब स अपार्टमेंट  
लोधी रोड  
नई दिल्ली

29 सितंबर, 2019

प्रिय माधव

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहाँ भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मैं कल कॉफी हाउस में शिव से मिला था और उन्होंने मुझे बताया था कि पिछले सप्ताह आप एक गंभीर दुर्घटना से ग्रसित हुए। खबर सुनकर मैं वास्तव में चौंक गया था और आपकी भलाई के बारे में चिंतित था। शिव ने मुझसे कहा कि तुम्हारे बाएं हाथ में भी मामूली फ्रैक्चर आया है। सड़क दुर्घटनाएं वास्तव में अब एक चिंता का कारण बन रही हैं।

सरकार द्वारा 'मोटर वाहन अधिनियम' जैसी कठोर नीतियों के बाद भी, उन्हें पूरी तरह से रोकना मुश्किल है। आपको अभी से सावधान रहना चाहिए। हमारी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। एक छोटी सी गलती से भारी भूल हो सकती है। मैं आपको वाहन चलाते समय चौकस और अनुशासित रहने की सलाह देता हूँ। मैं सप्ताहांत में आपसे मिलने की योजना बना रहा हूँ। मुझे उम्मीद है और आप जल्द ठीक हो जाएं.

खयाल रखना।

तुम्हारा दोस्त  
य र ल

४- “स्ट्रीट लाइट की समस्या” विषय पर संपादक को एक पत्र लिखें.

सेवा में

संपादक महोदय

श स ह दैनिक

नई दिल्ली -110077

विषय: स्ट्रीट लाइट की समस्या

आपके प्रतिष्ठित अखबार के सम्मानित मंच के माध्यम से, मैं आपके क्षेत्र में स्ट्रीट लाइट की समस्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा।

हमने खराब स्ट्रीट लाइट के बारे में कई बार शिकायत की है लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसके कारण लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। रात में सड़क के संकेत पूरी तरह से अदृश्य हो जाते हैं। स्पीड ब्रेकर, गड्ढे और मैनहोल स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते हैं, जिससे हमारे क्षेत्र में घातक दुर्घटनाओं का खतरा अधिक होता है। इससे नागरिकों के जीवन को भारी खतरा है। यहाँ शाम के बाद बहुत अंधेरा और असुरक्षित माहौल हो जाता है।

अंधेरा होने के बाद महिलाएं और बच्चे अपने घर से बाहर निकलने से डरते हैं। सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह से प्रभावहीन हैं। चोरी की घटनाएँ असमान रूप से बढ़ रही हैं। असामाजिक तत्वों को अपनी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है और इस विषय पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। यह वास्तव में नागरिकों में भय की भावना को बढ़ा रहा है। अपहरणकर्ता ऐसे क्षेत्रों को उनके अपवित्र कृत्यों के लिए अनुकूल पाते हैं।

इस खतरे को रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई की जरूरत है। यह पूरी तरह से समाज के कानून और व्यवस्था को ठप्प कर रहा है। इस गंभीर समस्या का संज्ञान लेने का अनुरोध है। स्ट्रीट लाइट का रखरखाव हमारे सुचारू और सुरक्षित जीवन के लिए तत्काल आवश्यक है।

हम इस मामले में आपके समर्थन की बहुत सराहना करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

य र ल  
धर्म कॉलोनी  
रामगढ़  
नई दिल्ली -110077

**५-सरकारी विभाग में भ्रष्टाचार के लिए संपादक को एक पत्र लिखें।**

सेवा में  
संपादक महोदय  
श स ह दैनिक  
नई दिल्ली -110077

विषय: सरकार विभाग में भ्रष्टाचार

आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र के सम्मानित तंत्र के माध्यम से, मैं सरकारी विभागों में चल रहे भ्रष्टाचार की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा।

यह सभी जानते हैं कि सरकारी कर्मचारी दिन-प्रतिदिन भ्रष्ट हो रहे हैं। आम लोग सत्ताधारी लोगों तक भी नहीं पहुँच सकते। धनवान लोग सत्ता की कोटरी को प्रभावित कर रहे हैं। सरकार से एक छोटा सा काम करवाने में जेब कटवानी पड़ती है। यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि हर कोई भ्रष्टाचार रुपी दलदल में डूबा हुआ है। । पारदर्शिता और जवाबदेही दूर के सपने लगते हैं। यह भारतीय समाज की लोकतांत्रिक संरचना के लिए अस्वास्थ्यकर और भयावह है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इसे आगे बढ़ाने से हिचक रहा है क्योंकि इसमें ऊँचे कद के लोग शामिल हैं। इस मामले को ईमानदार मीडियाकर्मियों के साथ-साथ जांच एजेंसियों की तत्काल कार्रवाई की जरूरत है। कड़ी कार्रवाई और ईमानदार पूछताछ समय की जरूरत है। चिंतित नागरिक अपनी आवाज उठा रहे हैं। मुद्दे को उजागर करने के लिए मीडिया का समर्थन सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

हम इस मामले में आपके योगदान की बहुत सराहना करेंगे।

धन्यवाद  
भवदीय



य र ल  
धर्म कॉलोनी  
रामगढ़  
नई दिल्ली -110077

**6-अपने एटीएम कार्ड को फिर से जारी करने के लिए बैंक प्रबंधक को एक पत्र लिखें।**

सेवा में  
संपादक महोदय  
श स ह दैनिक  
नई दिल्ली -110077

विषय: मेरे एटीएम कार्ड को फिर से जारी करने के लिए आवेदन

यह मेरे एटीएम कार्ड के बारे में कुछ महीनों से चली आ रही समस्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए है।

मेरे एटीएम जनवरी 2019 से मई 2019 तक पांच महीनों के लिए किसी भी लेन-देन से नहीं गुजरा। जिसके कारण यह अवरुद्ध हो गया है और आगे के लेनदेन से इनकार कर दिया गया है। मैंने बैंक में संबंधित अधिकारियों से सलाह ली और उन्होंने मुझे फिर से नया ए टी एम जारी करवानेके लिए एक आवेदन दायर करने की सलाह दी। उसी विवरण के तहत मैंने अपना आवेदन दायर किया और इसे संबंधित काउंटर पर भेज दिया, जहां से मुझे 3-4 सप्ताह तक इंतजार करने के लिए कहा गया था। दी गई अवधि के बाद मैंने फिर से बैंक का दौरा किया और उन्होंने आवेदन को फिर से दाखिल करने के लिए कहा। मैंने उसी के संबंध में दो आवेदन दायर किए हैं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। न तो मुझे अपना एटीएम कार्ड मिला है और न ही कोई प्रतिक्रिया।

कृपया मुझे सूचित करें कि मेरा एटीएम कार्ड पुनः प्राप्त करने में कितना समय लगेगा। अगर कुछ अन्य प्रक्रिया का पालन किया जाना है, तो कृपया मुझे इसके बारे में निर्देश दें। मैं कई बार बैंक में जा चुका हूं लेकिन यह मुझे इसका हल नहीं मिल रहा है। यह वास्तव में मुझे मुश्किल पैदा कर रहा है। जल्द से जल्द इस मामले को संज्ञान में ले।

त्वरित प्रतिक्रिया की बहुत सराहना की जाएगी।

धन्यवाद

भवदीय

य र ल

धर्म कॉलोनी

रामगढ़

नई दिल्ली -110077

**\*-विज्ञापन-लेख:-**

.१- विराट मोबाइल फ़ोन बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।


सुंदर सस्ता मन को भाई।  
फोन विराट मन ललचाए।

**विराट फ़ोन**

खूबियाँ—

- 3.9 स्क्रीन
- एंड्राइड 4.1 जेलीबीन
- दोहरा सिम
- 5 मेगा पिक्सल कैमरा।
- 1500 mAh बैटरी, ब्लू टूथ,
- एफ.एम. रेडियो।

(फ़्री सिलिकान कवर  
4 G.B. मेमोरी कार्ड)



ऑफर प्राइस  
₹ 3250/-



2. 'प्लाजा' कार कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।



**SALE**



**SALE**



**SALE**

अत्याधुनिक सुविधाओं वाली

**प्लाजा कार**

- सफर सुहाना, सुखद बनाए।
- एकदम आपके बजट में आए।
- 1200 सी.सी. पावर स्टेयरिंग
- पावर ब्रेक



इस सप्ताह खरीदने  
पर सप्ताह भर का  
पेट्रोल फ्री

3. 'मोहित' बैग बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।


आकर्षक रंग और डिजाइनों में

- क्या आप सफर पर जा रहे हैं?
- सुंदर
- मजबूत
- पेश है आपके लिए

\*शर्तें लागू

## मोहित बैग

तीन बैग खरीदने  
पर चौथा फ्री



4. 'ज्योति घड़ी' बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

घड़ी की दुनिया में क्रांति

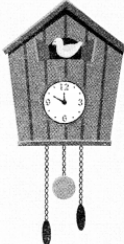

## ज्योति घड़ी

- दिखने में सुंदर, साइज़ बड़ा।
- हर हाथ चाहे ज्योति घड़ी।
- आकर्षक रंग और डिजाइनों में उपलब्ध।
- सुंदर
- मजबूत


विशेष छूट—  
MRP पर 10%

ज्योति घड़ी

छूट सीमित समय के लिए



5. 'रॉयल टेलीविज़न' बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।





**धमाका**

- आकर्षक, सस्ते विभिन्न आकार वाले
- बड़ा आकार, छोटा दाम
- ₹ 8000/- से शुरू

टेलीविज़न की दुनिया में धमाका

## रॉयल टेलीविज़न





**धमाका**

सस्ते दाम  
की गारंटी


फ्री  
हर टेलीविज़न के साथ  
दो माह का केबल पैकेज

..... अधिकृत विक्रेता—  
..... पवन इलेक्ट्रॉनिक्स, दरियागंज, दिल्ली।

6. 'उत्सव' छाता बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

## उत्सव छाते

- रंग-बिरंगे मन को भाए।
- इंद्रधनुष ज्यों हाथ उठाए।।
- आपको और आपके नन्हे-मुन्नों को
- वर्षा और धूप से बचाने आ गए हैं—
  - आकर्षक रंग
  - वाजिब दाम



चार छातों के  
साथ पांचवाँ फ्री

उत्सव छाते

उत्सव छाते

**\*-संवाद-लेखन:-**

आप गाजियाबाद निवासी अंकुर हैं। आपको चंडीगढ़ जाना है। उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के काउंटर पर बैठे क्लर्क

से हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर:

अंकुर - नमस्ते सर!

क्लर्क - नमस्ते! कहिए मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?

अंकुर - जी मुझे चंडीगढ़ जाना है। मुझे वहाँ जाने के लिए बस कब तक मिलेगी?

क्लर्क - गाजियाबाद से दिल्ली के लिए कोई सीधी बस नहीं है।

अंकुर - फिर मुझे क्या करना चाहिए?

क्लर्क - आप यहाँ से अंतरराज्यीय बस अड़्डा कश्मीरी गेट चले जाइए। वहाँ से आपको हर एक घंटे बाद बस मिल जाएगी।

अंकुर - क्या वहाँ से वातानुकूलित बस भी मिल जाएगी?

क्लर्क - वातानुकूलित बसें भी वहाँ से मिल जाएँगी, पर उनका समय आपको वहीं से पता चल पाएगा।

अंकुर - क्या आप दिल्ली से चंडीगढ़ का किराया बता सकते हैं ?

क्लर्क - (कोई पुस्तक देखकर) जी, वातानुकूलित बस का किराया 550 रु. है। शायद इस पर कुछ टैक्स भी लगे।

अंकुर - आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

क्लर्क - आपकी यात्रा मंगलमय हो।

प्रश्न: 2

आपका नाम मयंक है। आप ग्यारहवीं में विज्ञान वर्ग में प्रवेश लेना चाहते हैं। इस संबंध में विद्यालय के प्रधानाचार्य के साथ हुई बातचीत को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

मयंक - सर नमस्ते! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?

प्रधानाचार्य - नमस्ते! अंदर आ जाइए।

मयंक - सर मुझे विज्ञान वर्ग में ग्यारहवीं में प्रवेश लेना है।

प्रधानाचार्य - दसवीं कक्षा में आपको कौन-सा ग्रेड मिला है?

मयंक - जी मुझे 'ए' ग्रेड मिला है।

प्रधानाचार्य - विज्ञान, गणित और अंग्रेजी विषयों में कौन से ग्रेड मिले हैं?

मयंक - जी मुझे तीनों ही विषयों में 'ए' ग्रेड मिला है।

प्रधानाचार्य - आप विज्ञान विषय ही क्यों पढ़ना चाहते हैं ?

मयंक - विज्ञान विषय में मेरी विशेष रुचि है।

प्रधानाचार्य - क्या आपको नहीं लगता है कि विज्ञान कठिन विषय है?

मयंक - सर मेरे पिता जी बी०एस०सी० करके बैंक में क्लर्क हैं और माँ एम०एस०सी० करने के बाद प्राइवेट स्कूल में विज्ञान शिक्षिका हैं।

प्रधानाचार्य - तब आप इस सरकारी विद्यालय में क्यों पढ़ना चाहते हैं ?

मयंक - सर, मेरी पढ़ाई शुरू से ही सरकारी स्कूल में हुई है। मैंने इस विद्यालय का बड़ा नाम सुना है।

मेरे दो मित्र भी यहाँ बारहवीं में पढ़ते हैं।

प्रधानाचार्य - आप कक्षाध्यापक मि. शर्मा के पास फ़ीस जमा करवाकर प्रवेश ले लीजिए।

मयंक - जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रश्न:3

फ़िल्मों में दिनोंदिन अश्लीलता बढ़ती जा रही है। 'पाप' फ़िल्म देखकर लौटे अनुज की अपने मित्र से हुई बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

उत्तर:

अनुज - नमस्ते, रमन कहो इस समय कहाँ से आ रहे हो?

रमन - नमस्ते अनुज! इन छुट्टियों में कई दिनों से फ़िल्म देखने को मन हो रहा था। इस समय मैं फ़िल्म देखकर आ रहा हूँ।

अनुज - अच्छा! कौन-सी फ़िल्म देख रहे हो?

रमन - फ़िल्म का नाम था-पाप।।

अनुज - फ़िल्म के नाम से तो लगता है कि यह न तो देखने की चीज़ है और न करने की बल्कि उससे कोसों दूर रहने की चीज़ है।

रमन - कुछ ऐसा ही समझ लो।

अनुज - क्या फ़िल्म का विषय धार्मिक था?

रमन - मित्र मैंने समझा था कि कोई नया विषय होगा सो चला गया पर अब पता चला कि इसे देखकर समय और पैसा दोनों ही बरबाद किया।

अनुज - क्यों फ़िल्म की कहानी अच्छी नहीं थी?

रमन - अरे! ये फ़िल्म वाले भी न जाने क्या सोचकर बिना सिर-पैर वाली फ़िल्में बनाते हैं।

अनुज - फ़िल्म निर्माताओं का एकमात्र उद्देश्य पैसा कमाना रह गया है।

रमन - ठीक कहते हो तभी तो वे ज़बरदस्ती हिंसा, नग्नता और अश्लीलता को फ़िल्मों के माध्यम से दर्शकों के सामने परोसते हैं।

अनुज - इसमें हमारे समाज का भी दोष है। लोगों को ऐसी फ़िल्में नहीं देखनी चाहिए।

रमन - ठीक कहते हो मित्र तभी ऐसे फ़िल्म निर्माताओं को अक्ल आएगी।

प्रश्न: ४

लोगों की बढ़ती स्वार्थवृत्ति के कारण वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। वनों के इस सफ़ाए पर दो मित्रों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर:

उत्सव - अरे अनुराग! इतने दिन कहाँ थे? छुट्टियों में दिखाई ही नहीं दिए।

अनुराग - उत्सव, मैं दिखता कैसे?

उत्सव - क्यों अदृश्य होने का कोई फार्मूला हाथ लग गया है क्या?

अनुराग - अरे नहीं यार, इन छुट्टियों में मैं अपने दादा-दादी से मिलने गाँव चला गया था।

उत्सव - फिर तो बड़ा मज़ा आया होगा।

अनुराग - ठीक कह रहे हो उत्सव। वहाँ की हरियाली देखकर, आमों के बाग, कटहल, जामुन, फालसा आदि खाकर सचमुच मज़ा ही आ गया।

उत्सव - तब तो वहाँ से आने का मन ही नहीं कर रहा होगा?

अनुराग - शुद्ध ताज़ी हवा, ताज़ी हरी सब्जियाँ, शुद्ध ताज़ा दूध और शोर शराबा-रहित वातावरण छोड़कर आने को मन नहीं था पर छुट्टियाँ बीतने को थीं इसलिए आ गया।

उत्सव - अनुराग तू भाग्यशाली है। मुझे तो शहर के इसी प्रदूषित और दमघोंटू वातावरण में हर साल छुट्टियाँ बितानी पड़ती हैं।

अनुराग - शहरों में प्रदूषण बढ़ाने में हम लोग भी ज़िम्मेदार हैं।

उत्सव - वह कैसे?

अनुराग - लोग अपने स्वार्थ के लिए वनों का सफाया करते हैं, बस्तियाँ बसाते हैं। धनी लोग इन वनों को काटकर फैकि ट्रयाँ स्थापित करते हैं। वे खुद तो लाभ कमाते हैं पर वायुमंडल को प्रदूषित और असंतुलित करते हैं।

उत्सव - मैं इस वर्षा ऋतु में अपने साथियों से खूब सारे पेड़ लगाने के लिए कहूँगा।

अनुराग - इसी में हम सभी की भलाई है।

प्रश्न:५

आजकल बच्चे अपनी पढ़ाई से विमुख होकर कार्टून फिल्मों देखते हैं। इससे बच्चों के मन में हिंसा की भावना पनप

रही है। इस विषय पर दो सहेलियों रूपा और रश्मि के बीच हुई बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

उत्तर:

रुचि - नमस्ते रश्मि! कैसी हो?

रश्मि - मैं ठीक हूँ! तुम कैसी हो?

रुचि - मैं भी ठीक हूँ रश्मि! चलो घर चलते हैं। वहीं बैठकर बातें करते हैं।

रश्मि - नहीं रुचि, फिर कभी-अभी नहीं।

रुचि - अरे! अभी क्यों नहीं?

रश्मि - मेरे बेटे पप्पू को टीवी पर कार्टून देखने की आदत लग गई है। वह मौका पाते ही टीवी से चिपक जाता है।

रुचि - बच्चों को थोड़ी देर टीवी भी देखने देना चाहिए

रश्मि - रश्मि पर वह तो हर समय कार्टून फ़िल्में ही देखना चाहता है।

रुचि - फिर तो उसकी पढ़ाई प्रभावित हो रही होगी।

रश्मि - सिर्फ पढ़ाई ही नहीं उसका व्यवहार भी प्रभावित हो रहा है। इन कार्टूनों की मारधाड़ और हिंसक प्रवृत्ति उसके स्वभाव का अंग बन रही है। इतना ही नहीं उसका व्यवहार भी क्रूर होता जा रहा है।

रुचि - ऐसा कैसे पता लगा?

रश्मि - कल वह डॉगी को बिस्कुट खिला रहा था। जब डॉगी ने बिस्कुट नहीं खाया तो उसने उसका सिर पकड़कर दीवार से टकरा दिया।

रुचि - बच्चे को अच्छी कार्टून फ़िल्में देखने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि उनके स्वभाव में क्रूरता न आने पाए।

रश्मि - ठीक कह रही हो रुचि, हमें शुरू से ही इस पर ध्यान देना चाहिए था। लगता है अब पानी सिर से ऊपर बहने लगा है।

रुचि - हमें यूँ हिम्मत नहीं हारना चाहिए। चलो मैं ही उसे कुछ समझाती हूँ।

रश्मि - यह तो बहुत अच्छा रहेगा। हम एक कप चाय भी साथ पी लेंगे।

प्रश्न: 6

आजकल युवाओं में अंग्रेज़ी साहित्य पढ़ने और अंग्रेज़ी को महत्त्व देने का चलन बन गया है। वे हिंदी को उपेक्षित मानने लगे हैं। इसी विषय पर दो मित्रों कमल और केशव की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

उत्तर:

कमल - कैसे हो केशव, इस समय कहाँ से आ रहे हो?

केशव - कमल मैं एकदम ठीक हूँ। इस समय मैं बाज़ार गया था।

कमल - बाज़ार! क्या खरीदना था, भाई ?

केशव - गरमी की इन छुट्टियों में पढ़ने के लिए अंग्रेज़ी की कुछ पत्रिकाएँ और तीन-चार उपन्यास।

कमल - उपन्यास तो तुमने हिंदी का खरीदा होगा!

केशव - नहीं कमल मैं हिंदी का उपन्यास नहीं पढ़ता। मैंने उपन्यास भी अंग्रेज़ी का ही खरीदा है। इनमें से एक 'चार्ल्स डिकेन्स' और दूसरा रूडयार्ड किपलिंग द्वारा लिखित है।

कमल - तुम हिंदी का उपन्यास क्यों नहीं पढ़ते हो।

केशव - अंग्रेज़ी के उपन्यास पढ़ना गर्व की बात है। जो बात अंग्रेज़ी के उपन्यासों में है, वह हिंदी के उपन्यासों में नहीं।

कमल - क्या तुमने कभी प्रेमचंद, शरद चंद, जयशंकर प्रसाद, मृदुला गर्ग, वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों को पढ़ा है। एक बार पढ़ो तो जानो।

केशव - कमल, हिंदी के उपन्यास पढ़ने को मेरा मन नहीं करता।



कमल - केशव, क्या तुमने कभी सोचा है कि यदि हम भारतवासी ही हिंदी का प्रयोग पढ़ने, लिखने-बोलने और अन्य रूपों में नहीं करेंगे तो कौन करेगा? क्या तुमने फ्रांस, चीन, जापान वालों को अंग्रेजी पढ़ते या बोलते सुना है?

केशव - नहीं।

कमल - कभी सोचा है क्यों? उन्हें अपनी भाषा पढ़ने-लिखने और बोलने में गर्व महसूस होता है। अपनी भाषा ही हमें उन्नति की ओर ले जाती है।

केशव - मित्र! तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं अभी इस अंग्रेजी साहित्य को लौटाकर प्रेमचंद, जयशंकर, वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यास लाऊंगा।

### \*-सूचना पत्र-

१-आपके शहर के खादी वस्त्र भंडार ने गांधी जयंती के अवसर पर खादी वस्त्रों पर 10 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक छूट देने का निश्चय किया है ताकि खादी वस्त्रों की लोकप्रियता बढ़े। स्वयं को खादी वस्त्र भंडार का प्रबंधक मानकर एक सूचना आलेख तैयार कीजिए।

उत्तर:

<p style="text-align: center;"><b>खादी वस्त्र भंडार</b> <b>कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली</b> <b>सूचना</b></p> <p style="text-align: right;">15 सितंबर, 20XX</p> <p style="text-align: center;"><b>खादी वस्त्रों पर छूट की घोषणा</b></p> <p>आप सभी को अत्यंत हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि सरकार द्वारा खादी वस्त्रों को जन-जन तक पहुँचाने और उन्हें लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से सभी खादी वस्त्रों पर 10 प्रतिशत से 30 प्रतिशत की आकर्षक छूट देने का निश्चय किया गया है। यह छूट 15 नवंबर, 20XX तक प्रभावी रहेगी। लोग गांधी जी के प्रति आस्था प्रकट करने एवं राष्ट्र की प्रगति में सहयोग देने के लिए अधिकाधिक संख्या में खादी वस्त्रों का प्रयोग करें तथा छूट का लाभ उठाएँ।</p> <p>प्रबंधक खादी वस्त्र भंडार</p>
---

2-

आपकी कालोनी में रियायती दर पर हेपेटाइटिस-बी के इंजेक्शन लगवाने का निर्णय सदर लायंस क्लब पंजाबी बाग दिल्ली द्वारा लिया गया है। अपनी कालोनी के सूचनापट्ट पर लिखने के लिए एक सूचना आलेख तैयार कीजिए। आप कालोनी विकास समिति के सचिव हैं।

उत्तर:

**कॉलोनी विकास समिति**  
**मॉडल टाउन, दिल्ली**  
**सूचना**

02 मार्च, 20XX

**रियायती दर पर हेपेटाइटिस-बी के इंजेक्शन**

सभी कॉलोनीवासियों को सूचित किया जाता है कि सदर लायंस क्लब, पंजाबी बाग, दिल्ली द्वारा महिला दिवस अर्थात् 8 मार्च, 20XX को रियायती दर पर हेपेटाइटिस-बी के इंजेक्शन लगवाने का निर्णय लिया गया है। हेपेटाइटिस-बी से अपने परिवार और स्वयं को बचाने के इस अवसर का लाभ अवश्य उठाएँ। यह कार्यक्रम इस प्रकार है—

स्थान — सामुदायिक भवन  
समय — 08 मार्च, 20XX, प्रातः 9 बजे से सायं 4 बजे तक।  
अधिक जानकारी के लिए अधोहस्ताक्षरी से संपर्क करें—  
रूपेश कुमार  
(सचिव)  
आवास विकास समिति

3-

ग्रीष्मावकाश में झुग्गी-झोपड़ियों के उन गरीब बच्चों को स्वैच्छिक रूप से प्रतिदिन 9 बजे से 11 बजे तक पढ़ाने के लिए कुछ छात्र इच्छुक हैं। आप विद्यालय के हेड ब्वाय हैं। इसके लिए एक सूचना आलेख तैयार कीजिए, ताकि अधिकाधिक छात्र उत्साहित होकर इस कार्यक्रम में भाग लें।

उत्तर:

**जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल**  
**नांगलोई, दिल्ली**  
**सूचना**

02 मई 20XX

**गरीब बच्चों को स्वेच्छा से पढ़ाने का कार्यक्रम**

विद्यालय के छठों से बारहवीं के बच्चों को सूचित किया जाता है कि इस ग्रीष्मावकाश में रेलवे लाइन के किनारे बसी झुग्गी-झोपड़ी में उन गरीब बच्चों को पढ़ाने का एक स्वैच्छिक कार्यक्रम चलाया जाना है, जो किन्हीं कारणों से विद्यालय नहीं जा पाते

हैं। उन बच्चों में शिक्षा और ज्ञान का दीप जलाने के लिए उत्साही छात्रों से शामिल होने का अनुरोध किया जाता है। इच्छुक छात्र 05 मई तक अधोहस्ताक्षरी के पास नामांकन करा दें।

अमित कुमार  
हेड ब्वाय  
दसवीं-सी

४-

‘ज्योति आई केयर फाउंडेशन’ आपकी कॉलोनी में एक कैंप लगाना चाहती है, जिसमें 50 साल से अधिक

उम्र वाले स्त्री-पुरुषों की आँख संबंधी बीमारियों का निःशुल्क इलाज किया जाएगा। इस कैंप में साठ साल से अधिक आयु के लोगों को चश्मा मुफ्त दिया जाएगा। कॉलोनी के सचिव की तरफ से एक सूचना आलेख तैयार कीजिए।

उत्तर:

<b>सामुदायिक भवन</b> <b>संतनगर, दिल्ली</b> <b>सूचना</b>		11 मार्च, 20XX
<b>आँखों का निःशुल्क इलाज एवं चश्मा वितरण</b>		
इस कॉलोनी के सभी लोगों को सूचित किया जाता है कि वृद्धों के प्रति समर्पित संस्था 'ज्योति आई केयर फाउंडेशन' द्वारा अपनी कॉलोनी में एक कैंप लगाया जाएगा जिसका विवरण इस प्रकार है—		
दिन	— 20 मार्च, 20XX, रविवार	
समय	— प्रातः 8 बजे से सायं 5 बजे	
पात्रता	— आँखों का मुफ्त इलाज — 50 साल से अधिक उम्र मुफ्त चश्मा वितरण — 60 साल से अधिक उम्र	
आप अपने निकट संबंधियों को कैंप में लाएँ और इसका लाभ उठाएँ। कृपया आयु का प्रमाण-पत्र अवश्य साथ में लाएँ।		
किशोर कश्यप सचिव		

५-

आपका विद्यालय दसवीं कक्षा के तीस छात्रों को राजस्थान शैक्षिक भ्रमण पर ले जाना चाहता है। इसके लिए आवश्यक जानकारियाँ देते हुए एक सूचना आलेख तैयार कीजिए। आप नवजीवन सीनियर सेकेंड्री स्कूल, आलमबाग, लखनऊ के हेड ब्वाय आस्तिक शाक्य हैं।

उत्तर:

<b>नवजीवन सीनियर सेकेंड्री स्कूल</b> <b>आलमबाग, लखनऊ ( उ०प्र० )</b> <b>सूचना</b>		10 मार्च, 20XX
<b>राजस्थान भ्रमण कार्यक्रम</b>		
दसवीं कक्षा के छात्रों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारे विद्यालय द्वारा 23 मार्च, 20XX को राजस्थान भ्रमण हेतु वातानुकूलित बस द्वारा एक टूर का आयोजन किया जा रहा है, जो इस प्रकार है—		
टूर की अवधि	— 22 मार्च से 27 मार्च, 20XX तक	
जमा हेतु राशि	— ₹ 3000 प्रति छात्र	
चयन का आधार	— पहले आओ पहले पाओ	
इच्छुक छात्र 19 मार्च, 20XX तक रुपये जमा कराकर अपना नामांकन अधोहस्ताक्षरी को करा दें।		
आस्तिक शाक्य हेड ब्वाय		

७-

आपके विद्यालय ने गरीब छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पुस्तकें वितरित करने का निर्णय किया है। जिन

छात्र-छात्राओं के माता-पिता की वार्षिक आय एक लाख रुपये तक है, वे ही इसके पात्र हैं। इसकी सूचना देने के लिए एक आलेख तैयार कीजिए। आप छात्र कल्याण समिति के सदस्य अभिनव हैं।

उत्तर:

हिमालय सीनियर सेकेंड्री स्कूल

पंजाबी बाग, दिल्ली

सूचना

15 मार्च, 20XX

निःशुल्क पुस्तक वितरण

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय ने उन छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पुस्तकें देने का निर्णय लिया है जिनके माता-पिता की वार्षिक आय एक लाख रुपये तक है। यह पुनीत कार्य 04 अप्रैल, 20XX को प्रातः 8 बजे प्रधानाचार्या के हाथों शुरू होगा जो अपराह्न 3 बजे तक चलेगा। किसी असुविधा से बचने के लिए आय प्रमाण-पत्र (दिल्ली सरकार द्वारा जारी) अवश्य साथ में लाएँ।

अभिनव

(सदस्य)

छात्र कल्याण समिति

